तौहीद की हक़ीक़त

क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारुक़ी नदवी (आचार्य)
सदर जमीअ़त पयामे अम्न

मकतबः पयामे अम्न,
नदवा रोड, डालीगंज, लखनऊ, 20 (यू०पी०) इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रौशनी में)
लेखक-	मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी	तृतीय
पुस्तक संख्या	2000
वर्षा	2013
मूल्य	40 रू०
कम्पोज़िंग	मकतबः पयामे अम्न (इरफ़ान अह़मद)
प्रकाशक-	मकतबः पयामे अम्न, नदवा रोड डालीगंज लखनऊ

Book Name	**Tauheed Ki Haqeeqat**
Writer	**Mufti Mohd-Sarwar Farooqui Nadwi**
S. No.	**2000**
Publisher.	**Maktaba Payam-e-Amn, Nadwa Road, Daliganj, Lucknow, U.P. (INDIA)**
Website:	**www.islamicjpamn.com**
Mobile–	**0091– 9919042879, 9984490150**
E- Mail–	**maktaba.pyameamnlko@gmail.com siddiquilko@yahoo.com**

मिलने के पते

1. जामिया दारे अरक़म मुह़म्मदपुर गौंती, फ़तेह़पुर
2. न्यू सिल्वर बुक एजेन्सी, 14, मोहम्मद अली रोड, भिण्डी बाज़ार, मुम्बई–400003
3. सेन्ट्रल बुक डिपो, इब्राहीमपुरा भोपाल।
4. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
5. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
6. मकतबः हरमैन, मरकज़, लखनऊ

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्रस्तावना	5
तौहीद (अद्वैतवाद) अर्थात अल्लाह पर ईमान	7
तौहीद का मतलब	7
कलिमा	8
कलिमा क्या है	8
कलिमे का अर्थ	9
अल्लाह शब्द की व्याख्या	9
शब्द अल्लाह	9
कलिमा में इक़रार	10
अल्लाह मालिक है	11
अल्लाह की अमानत	11
सच्ची बात	11
मालिक की मर्ज़ी	12
मालिक का हक़	12
अल्लाह का वजूद साइंस की दृष्टि में	13
शरीर की रासायनिक प्रक्रियाएँ	13
पृथ्वी की सुविधाएँ	14
ताप घटने के कारण	14
पृथ्वी और सूर्य	14
पृथ्वी का जीवन	15
साइंस की दृष्टि में	16
ब्रह्माण्ड के एलीमेण्टस	16
ब्रह्माण्ड का विकास	17
नया सिद्धान्त	17
ब्रह्माण्ड का रूप	18
सृष्टि का सृष्टा	18
प्रकृति का जन्म	18
कलिमा में दूसरा इक़रार	19

विषय	पृष्ठ सं०
तौह़ीद के असरात	20
ईमान की ताक़त	22
ह़क़ की ह़ैसियत	23
तौह़ीद बुनियाद है	24
सारे इन्सान एक ख़ुदा के बन्दे और एक के बेटे	24
दीन में तौह़ीद की अहमियत	25
ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की इताअ़त तौह़ीद का ह़िस्सा है	25
आख़िरत तौह़ीद की रुह़ है	26
तौह़ीद में नर्मी नहीं	27
मुख़ालिफ़ीन की तद्बीरें	27
तौह़ीद के लिए दुश्मनी	28
ख़ुदा के ह़क़ इक़रार	28
तौह़ीद ख़ालिस का क़याम	29
तौह़ीद के ख़िलाफ़ बातें	30
इल्म ग़ैब का मतलब	30
ग़ैब का कुछ इल्म	30
इल्म ग़ैब किसको	31
भविष्य की बातें मालूम करना	31
सहर (जादू) एक सिफ़ली अ़मल है	32
जादू का शिर्क	32
इल्म ग़ैब का दावा	33
मज़ारात पर नज़्रो-नियाज़	34
क़ब्रों को पुख़्ता न बनाओ	35
क़ब्रों को सज्द:गाह बनाना मना है	35
पूरी ज़मीन सज्द:गाह है	36
शिर्क का अर्थ	37
शिर्क का मतलब	37
शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म	38
शिर्क	38
मुश्रिक पर जन्नत ह़राम है	39
शिर्क पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है	39
अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे को पुकारना	40

विषय	पृष्ठ सं०
जिनकी पूजा की जाती है	40
तकलीफ़ में बड़े को पुकारते हैं	41
तकलीफ़ में उसी को पुकारते हैं	42
शिर्क की क़िस्में	43
अल्लाह के बराबर इ़ल्म में शिर्क	43
इ़ल्म ग़ैब	44
तमाम इ़ल्म केवल अल्लाह तआ़ला को है	45
तसर्रुफ़ (अख़्तियार) में शिर्क	46
नज़र व नियाज़	46
अल्लाह ही के अधिकार में है	47
ज़र्रह् बराबर जो मालिक न हो	47
मक्का के मुश्रिक	48
इ़बादत में शिर्क	49
इबादत की परिभाषा	49
इ़बादत की ह़क़ीक़त	49
अल्लाह के अ़लावा किसी और के साथ इ़बादत जैसा मामला करना	50
बुज़ुर्ग को पुकारना	51
आदम और मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त	51
अल्लाह की सिफ़ात (गुणों) में शिर्क	52
अल्लाह के ह़ुक़ूक़ में शिर्क	52
शिर्क नाक़ाबिले माफ़ी जुर्म	53
आ़दतों में शिर्क	53
शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क)	54
शिर्के अस्ग़र (छोटा शिर्क)	55
शिर्क जली (ज़ाहिरी शिर्क)	55
शिर्क ख़फ़ी (हल्का शिर्क)	56
इख़्लास	57
शिर्क अकबर और अस्ग़र में अन्तर	58
शफ़ाअ़त ह़क़ है	58
शफ़ाअ़त केवल अल्लाह के अधिकार में है	58
शफ़ाअ़त का आप (सल्ल०) से सवाल	60

विषय	पृष्ठ सं०
शिर्क से कैसे बचें	61
बुतों को पूजने की मुराद	61
ग़ैर अख़्तियारी फ़रियाद करना	62
ज़िन्दा लोगों से दुआ़ करना जायज़	63
तौह़ीद (एकेश्वरवाद) का सम्बन्ध	63
तौह़ीद के क़ुबूल न करने के उज़्र	63
मुसलमान की मौजूदा ह़ालत और शिर्क	66
ह़ालात की तब्दीली	66
उलूमे सिफ़लिया	67
जिन्नात की तस्ख़ीर	67
इ़ल्म अस्मा	68
बुज़ुर्ग परस्ती और बिद्अ़ते	68
नसब को ज़रिया निजात	70
असबियत	70
इस्लामी अह़काम	71
मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती	72

प्रस्तावना

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

अम्बिया-ए-किराम की सारी जद्दोजेहद का मक़्सद तौह़ीदे ख़ालिस का क़याम है वह दुनिया में इसी लिए आते हैं कि ख़ुदा के बन्दों को दूसरों की बन्दग़ी से छुड़ा कर ख़ालिस ख़ुदा का बन्दा बना दें। वह उसी को ख़ालिक़ मानें, उसी को बादशाह कहें, उसी की बन्दग़ी करें, उसी की इताअ़त करें, उसी पर एतिमाद व तवक्कुल करें, उसी से तालिबे मदद हों, नेअ़मत मिले तो उसी का शुक्र अदा करें, मुसीबत आए तो उसी से इस्तिग़ासा करें।

तमअ़, ख़ौफ़, उम्मीद, हर ह़ाल में उन की नज़र उसी की तरफ़ हो वह अपने आप को उस के ह़वाले कर दें। उन की मुह़ब्बत उस की मुह़ब्बत के ताबेअ़, उन की पसन्द उसकी पसन्द के तह़त हो, उस की ज़ात में, उस की सिफ़ात में, उस के हुक़ूक़ में, उस की यकताई तस्लीम करें और किसी पहलू से इन चीज़ों में किसी को शरीक न ठहराएँ। न किसी फ़रिश्ते को, न किसी जिन्न को, न किसी नबी को, न किसी वली को, न किसी और को, न अपनी ज़ात को।

तौह़ीद की ह़क़ीक़त वाज़ेह़ हो जाने के बाद यह बात बिलकुल साफ़ हो गई है कि अस्ल ह़क़ीक़त के एतिबार से तौह़ीदे दीन का सिर्फ़ एक जुज़ नहीं है बल्कि यह सारे दीन पर मुह़ीत है।

नमाज़ इ़बादतों में सबसे बड़ी इ़बादत है लेकिन मकरूह वक़्त में, या हड़पी हुई ज़मीन पर उसका पढ़ना गुनाह है। इसी तरह रोज़ः भी एक अहम इ़बादत है लेकिन ईद या तश्रीक के दिनों में रोज़ः रखना गुनाह है, इसलिए कि यह शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ है। इस तरह नमाज़ इ़बादत की ह़क़ीक़त फ़रमाँबरदारी के रूप में है न कि अपनी मर्ज़ी से नमाज़, रोज़ः आदि।

इ़बादत में अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न मानने का मतलब होता है कि किसी से मुह़ब्बत अल्लाह के समान न हो, न किसी का डर उसके समान हो, न किसी से उम्मीद उसके समान हो, न किसी पर ऐसा भरोसा जैसा अल्लाह पर

होना चाहिए, न किसी काम को इतना ज़रुरी समझे जितना अल्लाह की इ़बादत को, और न अल्लाह के समान किसी की नज़र और मन्नत माने, न अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाए और न अल्लाह के समान किसी दूसरे को सम्मान दे।

समाज में इन कोताहियों के पेशेनज़र यह किताब तैयार की गई है। इसमें किसी को निशाना बनाना मक़्सद नहीं है बल्कि मिसाल दे कर इसलिए बयान किया गया है ताकि लोग तौह़ीद और शिर्क को अच्छी तरह़ समझ सकें उसके लिए मुआ़शरे में जो कुछ होता है उन के नाम के साथ वाज़ेह़ किया गया है, ताकि लोग अपने कुफ़्र शिर्क से दुनिया ही में तौबः कर लें और जन्नत के ह़क़दार हो जाएँ।

अब आख़िर में हम जनाब सलमान दामूदी साह़ब, इरफ़ान अह़मद, अ़ताउल्लाह सिद्दीक़ी, नजमुस्साबिक़ और जावेद अह़मद के शुक्रगुज़ार हैं जिन्होंने प्रूफ़ पढ़ने में मेरी मदद की।

अल्लाह तआ़ला कुबूल फ़रमाए और तमाम इन्सानों को जन्नत में जाने का ज़रिया बनाए, हम सब को और क़ियामत तक आने वाली तमाम नस्लों को कुफ़्र शिर्क से मह़फ़ूज़ फ़रमाए और अगर कोई कोताही हो गई हो तो मरने से पहले तौबः की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये।

दुआ़ओ का तालिब

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
दारुल उ़लूम नदवतुल उ़लमा लखनऊ
9-6-2006

तौह़ीद (अद्वैतवाद) अर्थात अल्लाह पर ईमान

ईमान का शाब्दिक अर्थ होता है 'आस्था (यक़ीन) अर्थात किसी की बात को किसी के भरोसे पर मान लेना।'

इस्लाम में अर्थात शरीअ़त के अनुसार ईमान का पारिभाषिक अर्थ होता है, 'ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) के भरोसे पर अल्लाह की ओर से आई हुई तमाम बातों को मानना।'

मान लेने का भी मतलब यह है कि ज़बान से इक़रार हो, दिल से उसकी तस्दीक़ हो और अ़मल से उस का इज़हार हो तब समझा जाएगा कि अब किसी बात पर मुकम्मल ईमान है।

तौह़ीद का मतलब

तौह़ीद का मतलब होता है 'अल्लाह तआ़ला को एक मअ़बूद मानना और किसी दूसरे को उसकी किसी सिफ़त (गुणों) में शरीक या बराबर का न समझना।'

अल्लाह को एक मअ़बूद (उपास्य) मानने का मतलब यह है, कि वही इ़बादत व उपासना के लायक़ है। वही सबको मदद पहुँचाने वाला, मुश्किल को आसान करने वाला, ज़रूरतों को पूरा करने वाला, सारी चीज़ों का अख़्तियार रखने वाला, सबकी पुकार सुनने वाला, और ग़ैब की बातों को जानने वाला वही अकेला एक है। उस जैसा कोई नहीं न कभी होगा, उसका कोई रूप नहीं और न कभी होगा, और न उसका कोई रूप धारण कर सकता है, और न वह कभी इन्सान या किसी और रूप में धरती पर आया।

तौह़ीद ही इस्लाम की सबसे पहली बुनियाद है, जिस समय आदमी मुसलमान होता है तो वह इन शब्दों का इक़रार करता है जो अ़रबी भाषा के शब्द

हैं। इसे कलिमा कहते हैं।

कलिमा

"लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि"

अनुवाद– अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं। मुह़म्मद अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) हैं।

व्याख्या–

इस कलिमे में सबसे पहले कहा गया है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य (मअ़बूद) नहीं, अर्थात इसी शब्द के न मानने की वजह से पहले काफ़िर था अब मुसलमान हो गया, पहले नापाक था अब पाक हो गया, पहले अल्लाह के ग़ज़ब का ह़क़दार था अब उसका प्यारा हो गया, पहले दोज़ख़ में जाने वाला था अब जन्नत का दरवाज़ा उसके लिए खुल गया, और बाप अगर कलिमा पढ़ने वाला है और अब कलिमा पढ़ने के बाद अगर बेटा कलिमा का इन्कार करने वाला है तो बाप की जायदाद में बेटे को ह़िस्सा न मिलेगा।

कलिमा क्या है–

कलिमा तो केवल चन्द अक्षर ही है जैसे 'लाम्-अलिफ़-हा' और ऐसे ही दो चार अक्षर और इतनी सी बात से ज़मीन व आसमान का अन्तर कैसे हो जाता है!

वास्तविकता यह है कि शब्दों का असर उसके भावों या अर्थों से होता है अर्थ अगर न हो और वह दिल में न उतरें और उनके ज़ोर से विचार न बदलें तो केवल इन शब्दों के पढ़ लेने से कुछ नहीं होता। जैसे किसी को प्यास लगी हो और सुबह से शाम तक पानी-पानी चिल्लाता हो तो प्यास न बुझेगी, हाँ पानी का एक घूँट लेकर पी लेगा तो सारी प्यास बुझ जाएगी।

यही ह़ाल कलिमा का भी है कि केवल दो चार शब्द बोल देने से इतना अन्तर नहीं होता कि आदमी काफ़िर से मुसलमान हो जाए, नापाक से पाक हो

जाए, धुत्कारा हो जाने के बजाए प्यारा हो जाए, या दोज़ख़ी से जन्नती बन जाए, बल्कि वजह यह है-

कलिमे का अर्थ

कलिमा के शब्दों का जब इक़रार किया जाता है तो यह अल्लाह के सामने और सारी दुनिया के सामने एक इक़रार होता है, और इस इक़रार से एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी आ जाती है, इसके बाद अपने दिल में किसी ऐसी बात की जगह नहीं दे सकता जो इस कलिमे के ख़िलाफ़ हो। इस कलिमे के इक़रार के बाद इन्सान अल्लाह के हुक्मों का पाबन्द बन जाता है आज़ाद नहीं रहता कि जो चाहे करे, अर्थात अल्लाह के सिवा और कोई मअ़बूद (उपास्य) नहीं का मतलब यह हुआ कि-

अल्लाह शब्द की व्याख्या-

शब्द अल्लाह इस संसार के पैदा करने वाले का इस्म ज़ात (व्यक्तिवाचक) (Proper Noun) है, इसके सिवा तमाम नाम जैसे रह़मान, रह़ीम, करीम, सत्तार आदि उसकी सिफ़त (गुण) बताते हैं जो इस्म सिफ़ात (Proper Adjective) कहलाते हैं।

शब्द अल्लाह-

अल्लाह शब्द 'इलाह' से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है मअ़बूद यह 'अलिफ़', 'लाम' और 'हे' के धातु से बना है। 'कल्दानी' और 'सूर्यानी' का 'आलिहा' इब्रानी का 'उलूह' और अ़रबी का 'इलाह' इसी से बना है, बेशक यह इलाह है जो 'अलिफ़्' और 'लाम्' अक्षरों को बढ़ा देने से किसी जातिवाचक को व्यक्तिवाचक बना देता है जो अल्लाह बन गया और इस प्रयोग ने अल्लाह नाम को उस सत्ता के लिए ख़ास कर दिया जो तमाम सृष्टि का सृष्टा है।

इसमें विद्धानों का इख़्तिलाफ़ है मगर ख़ुलासा यह है कि अल्लाह का व्यक्तिवाचक नाम इलाह है जिसका अर्थ मअ़बूद (उपास्य) है। इस 'इलाह' शब्द पर 'अलिफ़्' और 'लाम्' बढ़ा देने का अर्थ यह है कि एक अल्लाह ही मअ़बूद

(उपास्य) है जिसके अन्दर वह विशेष गुण पाए जाते हों जो उसके अतिरिक्त किसी और में पाए ही न जाते हों।

इस नाम का न बहुवचन आता है न स्त्रीलिंग और न यह किसी दूसरे शब्दों से मिलकर बना है और न ही इसका वास्तविक अनुवाद किसी दूसरी भाषा में संभव है इसलिए कि शब्द अल्लाह अपने अन्दर बहुत से माने रखता है। ऐसा कोई शब्द नहीं कि एक ही समय में इतने अर्थ जमा हो जाएँ अगर किसी को 'करीम' कहा जाए तो इसका मतलब यह नहीं कि वह 'इंसाफ़' करने वाला भी हो इसी तरह अगर किसी को 'रह़ीम' कहा जाए तो यह ज़रूरी नहीं कि वह 'हकीम' भी हो एक 'करम' करने वाला 'नाइंसाफ़ी' कर सकता है एक रह़म करने वाला हिफ़ाज़त के ख़िलाफ़ क़दम उठा सकता है, लेकिन जब 'अल्लाह' कहा जाता है तो उसका मतलब यह होता है कि ऐसी ज़ात जिसके अन्दर तमाम गुण एक ही समय में मौजूद हों एक ही समय में आदिल भी हो तो पूरी क़ुदरत रखता हो, रह़म करने वाला हो तो सज़ा भी दे सकता हो, इन्साफ़ करने वाला हो तो ह़िकमत वाला भी हो, ऐसा केवल वही हो सकता है, जिसने इस सृष्टि को पैदा किया हो। इस तरह अल्लाह वह हुआ जो सारी दुनिया का मालिक हो ह़ाकिम, पैदा करने वाला, पालने और पोसने वाला, दुआ़ओं का सुनने वाला और पूरा करने वाला हो, तो यही इसका ह़क़दार है कि उसकी इबादत की जाए।

'लाइलाहइल्लल्लाहु' के इक़रार करने का मतलब यह हुआ कि यह दुनिया न तो अपने आप बनी है और न ऐसा हुआ है कि उसके बहुत से अल्लाह हों बल्कि अल्लाह केवल एक ही है।

कलिमा में इक़रार

कलिमा में जो इक़रार किया जाता है वह यह है कि वही एक अल्लाह हमारा और सारी दुनिया का मालिक है हमारी और दुनिया की हर चीज़ का वही पैदा करने वाला है वही रोज़ी देने वाला, वही मौत और ज़िन्दगी देने वाला और दु:ख सुख का देने वाला ह़क़ीक़त में वही है।

डरना चाहिए तो उसी से, मांगना चाहिए तो उसी से, सिर झुकाना चाहिए

तो उसी के सामने, इबादत और बन्दगी की जाए तो उसी की, उसके सिवा हम किसी के बन्दे और ग़ुलाम नहीं हैं और उसी के हुक्म पर चलें, इसलिए अल्लाह से इक़रार करें तो ख़ूब सोच कर करें फिर उसको पूरा करें इसलिए कि केवल ज़बानी इक़रार करना फ़ायदा न पहुँचाएगा।

अल्लाह मालिक है-

मालिक होने का अर्थ यह है कि हमारी जान हमारी अपनी नहीं हमारे हाथ अपने नहीं, बल्कि अल्लाह के हैं हमारे हाथ अपने नहीं, हमारी आँखें और हमारे कान, और हमारे जिस्म का कोई अंग, हमारा अपना नहीं, यह ज़मीनें जिनको हम जोतते हैं, यह जानवर जिनसे हम ख़िदमत लेते हैं, यह माल जिनसे हम फ़ायदा उठाते हैं, इनमें से कोई भी चीज़ हमारी अपनी नहीं, सब अल्लाह ही की है, यह अमानत के तौर पर हमें मिली है।

अल्लाह की अमानत-

हमें जो चीज़ें भी मिली हैं वह अल्लाह की अमानत हैं कलिमे का इक़रार करने के बाद हमारा यह हक़ नहीं कि हम यह कहें कि, जान हमारी, जिस्म हमारा और माल हमारा है, एक ओर तो अल्लाह को मालिक माने और दूसरी ओर अपनी चीज़ कहने लगें यह एक बड़ी झूठी बात है।

सच्ची बात-

अगर हम मानते हैं कि इन सब का मालिक अल्लाह है तो इससे दो बातें पैदा होती हैं।

एक तो यह कि जब मालिक अल्लाह है और उसने अपनी मिल्कियत अमानत के तौर पर हमारे हवाले की है तो जिस तरह मालिक कहता है उसी तरह हमें इन चीज़ों से काम लेना चाहिए उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अगर इनसे काम लिया तो मालिक से धोखेबाज़ी हो गई।

हमें तो हाथ और पैर को भी उसके मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हिलाने का हक़ नहीं, इन आँखों से भी उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ देखने का हक़ नहीं हमको इस

पेट में डालने का हक़ नहीं जो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हों, हमें इन ज़मीनों और जायदादों पर भी मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई हक़ नहीं, हमारी बीवियाँ और औलादें यह केवल इसलिए हमारी हैं कि हमारे मालिक की दी हुई हैं इसलिए हम को इनसे अपनी इच्छा के मुताबिक़ नहीं बर्ताव करना, बल्कि मालिक के हुक्म के अनुसार ही बर्ताव करना चाहिए।

अगर इसके ख़िलाफ़ करेंगे तो वह ऐसे ही होगा जैसे किसी दूसरे के ज़मीन पर क़ब्ज़ा करने वाला जिसे बेईमान कहा जाता है।

इसी तरह अल्लाह की दी हुई चीज़ों को हम अपना समझ कर अपनी मर्ज़ी के अनुसार प्रयोग करेंगे या अल्लाह के सिवा किसी और की मर्ज़ी के अनुसार उनसे काम लेंगे तो उसी तरह बेईमानी का इल्ज़ाम हम पर भी आएगा।

मालिक की मर्ज़ी-

अगर कोई व्यक्ति मालिक की मर्ज़ी के अनुसार काम करता है फिर उसमें नुक़सान होता है तो उस व्यक्ति पर कोई इल्ज़ाम नहीं आएगा इसलिए कि अगर जिसकी चीज़ है वही अगर नुक़सान पसंद करता है तो उसको हक़ है जैसे हाथ पैर टूटने को औलाद के नुक़सान होने, माल के बर्बाद होने को अगर वह पसंद करता है तो हमें दुःख न होना चाहिए।

हाँ अगर मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हम काम करें और उसमें किसी चीज़ का नुक़सान हो तो बेशक हम मुजरिम होंगे क्योंकि हमने दूसरे के माल को बर्बाद किया हमारी जान अपनी नहीं है इसलिए अगर जान भी दी जाएगी तो मालिक की मर्ज़ी के अनुसार तो मालिक का हक़ अदा हो जाएगा।

मालिक का हक़-

दूसरी बात यह है कि मालिक ने जो चीज़ हमें दी है उसको अगर हम मालिक ही के काम में ख़र्च करते हैं तो किसी का एहसान नहीं करते, न मालिक पर और न किसी और पर, हमने अगर उसकी राह में कुछ दिया, कुछ ख़िदमत की, या जान ही दे दी जो बड़ी चीज़ मानी जाती है तब भी कोई एहसान नहीं किया

वह तो बस इतना ही हुआ कि मालिक का जो हक़ था हमने अदा कर दिया इसलिए मालिक के मर्ज़ी के अनुसार किसी चीज़ को ख़र्च करने या कोई काम अंजाम देने पर घमंड करना, तारीफ़ चाहना नेकियों को बर्बाद कर देता है। इसलिए मालूम यह हुआ कि जो चीज़ें हमारे पास हैं वह सब मालिक की हैं तो अब मालिक की चीज़ों को मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अपने दिमाग़ को बेचना अपने हाथ पैर को बेचना अपने जिस्म की ताक़तें बेचना और फिर उसके दुश्मनों के हाथ बेचना यह बहुत बड़ा क़ानूनी जुर्म है तो क्या अल्लाह के साथ दग़ाबाज़ी और धोखाधड़ी नहीं है इसका अल्लाह ज़रूर हिसाब लेगा।

अल्लाह का वजूद साइंस की दृष्टि से

अल्लाह की निशानियों को जब हम साइंस की दृष्टि से देखते हैं तो अल्लाह पर हमारा यक़ीन और मज़बूत हो जाता है। इसलिए कि मानव का वजूद जिन चीज़ों पर निर्भर है उसकी एक लम्बी लिस्ट है।

शरीर की रासायनिक प्रक्रियाएँ–

इन्सान की ज़िन्दगी के लिए 'कार्बन', 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' ज़रुरी हैं तथा बहुत कम मात्रा में 'लोहा', 'कैल्शियम', 'फ़ास्फ़ोरस' आदि चाहिए साथ ही कुछ का अनुपस्थित होना ज़रुरी है जैसे- हमें 'मीथेन, सल्फ़ाइड, ऑक्साइड' या 'अमोनिया' का वायुमण्डल नहीं चाहिए जैसा कि सौर मण्डल के दूसरों ग्रहों पर है साथ ही गृह का तापमान एक निश्चित सीमा में बना रहना चाहिए वरना हमारे शरीर की जैव रासायनिक प्रक्रियाएँ नहीं चल पाएँगी।

तापमान के सन्तुलन के लिए गृह को एक समान ऊर्जा देने वाला तारा चाहिए, ऐसा तारा जिसका जीवन काल लम्बा हो और वह बिना किसी उतार चढ़ाव के गृह को नियमित रूप से ऊर्जा दे, इसके लिए ग्रह पर गुरूत्वाकर्षण इतना होना चाहिए कि वह वायुमण्डल को बांध कर रख सके, लेकिन यह गुरुत्वाकर्षण इतना ज़्यादा नहीं होना चाहिए कि चलने-फिरने से हड्डियाँ टूट जाएँ।

हमारी पृथ्वी और सूर्य इन सब शर्तों को पूरा करते हैं इसलिए यहाँ हमारा

और दूसरे प्राणियों का वजूद है।

पृथ्वी की सुविधाएँ–

यहाँ हमारा और दूसरे प्राणियों का वजूद है। क्या ऐसा नहीं लगता कि किसी ने अपनी क़ुदरत से पृथ्वी को हम सब लोगों के निवास के क़ाबिल बनाया। ऐसी पृथ्वी जहां और भी बहुत सी सुविधायें हमें प्राप्त हैं। उदाहरण के लिए 'वाह्य' वायुमण्डल में उपस्थित ओजोन की परत सूर्य से आने वाली हानिकारक 'पराबैंगनी' (Ultraviolet Rays) किरणों से हमारी रक्षा करती है। पृथ्वी का शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र इस पर मौजूद प्राणियों को कास्मिक किरणों और 'सब एटामिक पार्टिकिल्स' की बमबारी से बचाता है।

ताप घटने के कारण–

इसी तरह एक आम नियम है कि ताप घटने के साथ-साथ द्रव का घनत्व बढ़ता है और जब वह ठोस में बदलते हैं तो उनका घनत्व द्रव रूप की अपेक्षा कम हो जाता है और भारी होकर वह द्रव की सतह में बैठ जाते हैं। लेकिन पानी इसका अपवाद है। इसका घनत्व चार डिग्री सेन्टीग्रेट ताप तक बढ़ता है लेकिन और ताप कम करने पर इसका घनत्व फिर घटने लगता है यही कारण है कि बर्फ़ पानी से हल्की होती है। पानी के इसी गुण के कारण ठंडे स्थानों में जब पूरा तालाब बर्फ़ में परिवर्तित हो जाता है तो नीचे की सतह पहले की तरह़ द्रव रूप में रहती है और उसमें उपस्थित मछलियां अपना जीवनयापन करती रहती हैं यह सब कौन करता है।

पृथ्वी और सूर्य–

पृथ्वी, सूर्य से एक संतुलित दूरी पर स्थित है। अगर यह सूर्य के पास होती तो ध्रुवकेन्द्रीय बलों (Centripital Forces) के कारण इसकी घूर्णन गति समाप्त हो जाती है, परिणाम यह होता है कि गृह के एक पृष्ठ पर हमेशा दिन की अवस्था रहती जबकि दूसरे पर रात की, फ़लस्वरूप दोनों पृष्ठों पर तापमान चरम सीमा पर पहुँच जाता और आख़िर में एक तरफ़ पानी और

वायुमण्डल समाप्त हो जाते, जबकि दूसरी तरफ़ जमकर बर्फ़ में परिवर्तित हो जाता। स्पष्ट रहे जीवन पनपने का फिर कोई आसार ही नहीं रह जाता!

पृथ्वी का जीवन–

यहाँ पर लगता है कि *पृथ्वी को जीवन क्षेत्र बनाने के लिए पूरी तरह "सुविधायुक्त" किया गया है और यह सब किसी शक्ति की सोच का परिणाम था।* यहाँ पर कुछ लोग इस सोच को संकीर्ण बता सकते हैं। और इस सम्बन्ध में उनके पास कुछ दलीलें भी होंगी। ज्ञात होता है कि अगर पृथ्वी पर इस रूप में वातावरण न होकर किसी और रूप में होता तो जीवधारी उसी रूप में अपने को ढाल लेते, गुरुत्व अधिक होगा तो जीवधारी भी मज़बूत होंगे। 'ओजोन परत' न होती तो 'पराबैंगनी विकिरण' को झेलने की शक्ति वाले प्राणी यहां पनप रहे होते। मीथेन के वायुमण्डल में जीवधारियों की जैव रासायनिक क्रिया मीथेन की सहायता से चल सकती है। यानि परिवेश (Environment) बदलने पर जीवधारी भी उसी के अनुरूप ढ़ल जाते।

उदाहरण–

इसके उदाहरण भी हम अपनी पृथ्वी पर देखा करते हैं। चाहे तपते रेगिस्तान हों, हिमाच्छादित आर्कटिक प्रदेश, अफ़्रीका या साउथ अमेरिका के घने जंगल हों या समुद्र की तलहटी के उच्च दबाव वाले क्षेत्र, हर जगह जीवधारी मिल जाते हैं जो अपने-अपने हिसाब से संसार में संतुष्ट हैं और पनप रहे हैं।

लेकिन अगर यह मान लिया जाये कि जीवधारी वातावरण के अनुसार अपने को ढालने में सक्षम हो जाते हैं तो *प्रश्न उठता है कि सौरमण्डल के दूसरे ग्रहों पर फिर जीवन क्यों नहीं पनपता?* इन दोनों बातों पर विचार करने के *पश्चात यहाँ भी अल्लाह का वजूद सिद्ध हो जाता है।* पृथ्वी पर हर परिवेश में जीवन पनपने से यह सिद्ध होता है कि अल्लाह ने हर तरह के प्राणी सृजित किये हैं और उनके जीवन के लिए उन्हीं का परिवेश प्रदान किया जहाँ वे बिना किसी रुकावट के अपना जीवनयापन कर रहे हैं।

अगर ये सब केवल संयोगवश होता है तो एक के बाद एक आने वाली

विपरीत परिस्थितियां या तो जीवन पनपने ही न देती और अगर पनपता भी तो कुछ समय बाद समाप्त हो जाता। रही बात प्राणियों द्वारा परिवेश के अनुसार अपने को ढालने की तो इस अवस्था में दूसरे ग्रहों पर भी जीवन पनपना चाहिए था।

ब्रहमाण्ड के जन्म की कहानी मान्यताओं को और दृढ़ रूप प्रदान कर देगी।

साइंस की दृष्टि से–

स्पेस टाइम की गणना कई ख़रब पहले की है। ब्रहमाण्ड का समस्त पदार्थ, दिशायें (Dimension) व टाइम सभी उसी क्षण एक बिन्दुवत (Ziro) अवस्था में थे। एक महाविस्फ़ोटक (Big Bang) के द्वारा यह अलग हुए। उसके बाद की अवस्था का अनुमान फ़न्डामेन्टल पार्टीकिल फ़िज़िक्स और क्वाण्टम मेकेनिक्स की सहायता से लगाया गया। उस समय ब्रहमाण्ड की संरचना अत्यन्त जटिल थी जिससे आज जैसी सरल रचना वाले ब्रहमाण्ड का जन्म हुआ। आज हम जिस ब्रहमाण्ड में रह रहे हैं उसका निर्माण भी अपने आप में आश्चर्य समेटे हुए है और यही लगता है मानो ब्रहमाण्ड का निर्माण किसी शक्ति ने मनुष्य और दूसरे प्राणियों की उत्पत्ति के लिए किया। निम्न पैरा में काफ़ी कुछ स्पष्ट हो जाएगा–

ब्रहमाण्ड के एलीमेन्ट्स–

ब्रहमाण्ड के शुरुआती एलीमेन्टस एक दूसरे से एकदम अलग थे। उनमें पारस्परिक सूचना का कोई आदान प्रदान नहीं हो रहा था। शुरुआती अवस्था में अगर वह ज़रा भी मार्ग से भटकते तो वह विचलन आज विशाल परिवर्तन ले आता।

उदाहरण के लिए आज कास्मिक विकिरण का मान तीन डिग्री परम ताप है। ब्रहमाण्ड में अगर थोड़ी भी शुरूआती हलचल भिन्न होती तो इसी विकिरण का ताप हज़ारों गुना भिन्न होता। गणना द्वारा यह ज्ञात किया गया है कि अगर कास्मिक विकिरण का मान मात्र १०० डिग्री सेल्सियस होता तो पानी द्रव अवस्था

में ब्रहमाण्ड में कहीं नहीं पाया जाता। और पानी के अभाव में जीवन पनपने का कोई प्रश्न ही नहीं था। इसी तरह तापमान एक हज़ार डिग्री सेल्सियस होता तो तारों का अस्तित्व संकट में पड़ जाता। ऐसे तीव्र विकिरण की उपस्थिति में गैलेक्सीज़ का वजूद मिट जाता।

यहाँ पर कहा जा सकता है कि अगर विकिरण उपरोक्त ताप पर होता तो हो सकता है कभी न कभी ब्रहमाण्ड के प्रसार द्वारा घट कर ३० डिग्री परमताप पर पहुँच जाता जैसा कि वर्तमान में है। लेकिन देखा गया कि तापमान एक अ़रब वर्ष में अपने प्रारम्भिक ताप पर आधा होता है। और यही तारों का जीवन काल होता है। स्पष्ट है कि जब जीवन के लिए आवश्यक विकिरण का ताप होता है तब तक सारे समाप्त हो चुके होते।

ब्रहमाण्ड का विकास–

प्रारम्भिक ब्रहमाण्ड से वर्तमान ब्रहमाण्ड के विकसित होने के कई रास्ते थे। उन रास्तों में से सृष्टि ने अपने विकास के लिए वह रास्ता चुना जिस पर चलकर जीवन की उत्पत्ति हुई हालांकि इस रास्ते के सेलेक्ट होने की प्रोबाबिलिटी(Probability) ज़ीरो थी।

इसी तरह से हमारा और दूसरे प्राणियों का अस्तित्व अनेक ऐसी घटनाओं का परिणाम है जिनके घटने की प्रोबेबिलिटी ज़ीरो होते हुए भी घटी। उनके बारे में अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक हैरान रह जाते हैं यह क्रम देखकर, और जो आस्तिक होते हैं वे अनायास ही अपने गाड के आगे नत्मस्तक हो जाते हैं और जो इन घटनाओं के लिए ज़िम्मेदार हैं। वरना प्रोबाबिलिटी ज़ीरो होने के पश्चात अधिक से अधिक एक या दो घटनाएँ संयोगवश घट सकती हैं। लेकिन घटनाओं का एक क्रम होना इस बात को सिद्ध करता है कि यह सृष्टि किसी महाशक्ति की रचना थी। इससे प्राणियों का वास कराना था, मानव जैसे बुद्धिमान प्राणी को जन्म देना था इसलिए उससे अपने हाथों से उन घटनाओं का तानाबाना बुना।

नया सिद्धान्त– कुछ वैज्ञानिक ब्रहमाण्ड और मानव जन्म से सम्बन्धित घटनाओं को देखकर एक नये सिद्धान्त पर विचार करने लगे हैं जिसे “एन्थ्रोप्रिक

प्रिन्सिपल” का नाम दिया गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार ब्रहमाण्ड का वर्तमान स्वरूप इसीलिए ऐसा है कि मानव जन्म के लिए ऐसा होना आवश्यक था। यह सृष्टि मानव के लिए बनी है अतः शुरू से आज तक घटी प्रत्येक घटना उद्देश्य पूर्ण थी, पूर्व निर्धारित थी। पूरे घटना क्रम का केवल एक उद्देश्य था कि एक ऐसे ब्रहमाण्ड को जन्म देना था जो ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करें जिससे मानव जन्म ले सके। *इस तरह ब्रहमाण्ड मानव के जन्म का कारण है। अब कई धर्मग्रन्थों में भी इस तरह के कथन आ चुके हैं जिसमें अल्लाह कहता है कि उसने पूरी क़ायनात इंसान के लिए बनायी और इंसान को इसलिए बनाया ताकि वह उसे पहचान कर उसकी इ़बादत करे।*

ब्रहमाण्ड का रूप–

इसी तरह ब्रहमाण्ड आज जिस रूप में है। चार मूल बलों से बंधे हुए तारे, गृह मण्डल तथा उन्हीं की सूक्ष्म कलाकारी के रूप में परमाणु, इलेक्ट्रान, प्रोटान इत्यादि भौतिक नियमों से बंधकर अपने स्थान पर गति करते हुए अपना कार्य कर रहे हैं। यदि इनमें से एक भी अपनी धुरी से हट जाये तो उससे सम्बन्धित एक बड़ा सिस्टम तहस नहस हो जाये। लेकिन ऐसा कभी नहीं होता और यहां पर लगता है मानो इस भौतिक नियमों को ऐसी महाशक्ति ने बनाया है जो ज्ञान में अपनी मिसाल आप है।

सृष्टि का सृष्टा–

यहीं से साइंस को कम से कम अपनी एक शाखा और विकसित कर लेनी चाहिये जिससे सृष्टि के रचयिता के बारे में अध्ययन हो। तब यह साफ़ हो सकता है कि धर्मो से प्रचलित ईश्वर से सम्बन्धित मान्यताओं का कितना अंश सत्य है और कितना मिथ्याओं और आडम्बरों पर आधारित है।

प्रकृति का जन्म–

अनेक छोटे बड़े नियम और सिद्धान्त जिन्हें प्रकृति के नियम कहा जाता है, अत्यधिक जटिल हैं। यह नियम बिना किसी दिशा देने वाले के स्वयं अपने आप

कैसे बन सकते हैं! वैज्ञानिक प्रकृति किसे कहते हैं? प्रकृति का जन्म कैसे हुआ? अगर इन सवालों पर विचार के लिए वैज्ञानिक अपने मस्तिष्क के द्वारों को खोल दे तो साइंस की नवीन शाखाओं का आविष्कार तथा विकास हो सकता है।

आज जरूरत इस बात की है कि आधुनिक वैज्ञानिक को पदार्थ तथा ऊर्जा पर चिंतन करने के सिवा उस महाशक्ति पर भी अपनी सोच के दरवाज़ों को खोल देना चाहिये। जिसे धर्मों ने ईश्वर, गाड या ख़ुदा का नाम दिया है। शायद विज्ञान तब भौतिकवाद, विनाशकारी आविष्कारों तथा प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़, से उभर कर सही रूप में मानव जाति बल्कि समस्त जीवधारियों के कल्याण के लिए कार्य कर सकेगा। *(ख़ुदा का वजूद साइंस की दलीलों से, पेज नं ६२ से ६६ तक)*

कलिमा में दूसरा इक़रार

"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

इसका मतलब यह है कि हमने मान लिया कि मुहम्मद अल्लाह के आख़िरी रसूल हैं, जिनके ज़रिए अल्लाह ने अपनी मर्ज़ी का क़ानून हमारे पास भेजा है। अल्लाह को अपना मालिक मान लेने के बाद यह जानना ज़रुरी था कि उसकी इच्छा क्या है, किन कामों से वह ख़ुश होता है और किन कामों से नाराज़। जब यह मालूम हो गया कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं तो उनकी बात मानना और उनकी पैरवी करना ज़रूरी है इसलिए कि पैग़म्बर मान लेने का मतलब ही यह है। आप ने यह मान लिया कि वह जो कुछ कह रहे हैं वह अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार कह रहे हैं, अब आप जो कुछ उस के ख़िलाफ़ कहेंगे या करेंगे, वह ख़ुदा के ख़िलाफ़ होगा।

दुनिया के हर काम में उस के माहिर की ज़रुरत पड़ती है और माहिर को काम सौंपने के बाद उस पर पूरा भरोसा किया जाता है क्योंकि सब लोग सब कामों के माहिर नहीं हो सकते। आप को अपनी सारी अक़्ल और होशियारी इस बात पर लगानी है कि आप बेहतरीन माहिर ढूढ़ लें, जब किसी के बारे में आप को यक़ीन हो जाए कि वह अपने फ़न का माहिर है तो उस पर पूरा भरोसा करना

चाहिए। फिर एक-एक बात कहना कि पहले हमें समझा दो तो मानेंगे यह अ़क्लमंदी नहीं है; ऐसा ही मामला धर्म का है कि आप को ख़ुदा का इ़ल्म ह़ासिल करने की ज़रुरत है।

आप यह जानना चाहते हैं कि अल्लाह की मर्ज़ी के अनुसार ज़िन्दग़ी गुज़ारने का तरीक़ा क्या है? आप के पास ख़ुद इन चीज़ों को मालूम करने का कोई ज़रिया नहीं।

अब आप पर फ़र्ज़ है कि अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर की तलाश[१] करें, इस तलाश में आप को बहुत होशियारी और समझबूझ से काम लेना चाहिए, क्योंकि अगर किसी ग़लत आदमी को आप ने पैग़म्बर समझ लिया तो वह आप को ग़लत रास्ते पर लगा देगा, परन्तु जब आप को ख़ूब जांच पड़ताल करने के बाद यह यक़ीन हो गया कि मुह़म्मद अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, तो उन पर पूरा भरोसा करके उनके हुक्म के अनुसार चलना ही अ़क्लमंदी है।

तौह़ीद के असरात

इन्सानी ज़िन्दग़ी पर चाहे इन्फ़िरादी हो या जमाअ़ती, उस के निहायत गहरे अस्रात होते हैं, उन में से कुछ इस तरह़ है।

इन्फ़िरादी ज़िन्दग़ी पर इस का सब से ज़्यादा नुमायाँ असर दिखाई देता है कि यही अ़क़ीदा इन्सान को आज़ादी व ह़ैरत का बुलन्द मक़ाम देता है जिस का वह अशरफ़ुल मख़्लूक़ात होने की वजह से मुस्तहि़क़ है। तमाम कायनात इन्सान के लिए पैदा हुई है, लेकिन जब तक इन्सान तौह़ीद से वाक़िफ़ नहीं होता उस वक़्त तक उस की रिज़ालत का यह ह़ाल होता है कि वह दुनिया की ह़क़ीर से ह़क़ीर चीज़ों से डरता और काँपता है।

जो चीज़ें उस की ताबेअ़दारी और इताअ़त के लिए पैदा हुई हैं वह ख़ुद उन की ताबेदारी और इताअ़त करता है। अपने ही जैसे इन्सान को अपना रब और आक़ा बनाता है। ग़ुलामों की तरह़ उन के आगे झुकता है, उन को दाता, ग़रीब परवर वग़ैरह मुख़ातब करता है।

१- ज़्यादा जानकारी के लिए लेखक की दूसरी किताब अन्तिम सन्देष्टा कब, कहाँ और कौन पढ़ी जा सकती है।

उन के लिए हर तरह के अम्र व नहि का हक़ तस्लीम करता है, यहाँ तक कि ज़िन्दों से गुज़र कर मुर्दों की क़ब्रों पर भी अपनी दरख़्वास्तें और इल्तिजाएँ पेश करता है, उन को क़ायनात में तसर्रुफ़ करने वाला आ़लिमुल ग़ैब और नफ़ा देने और नुक़सान पहुँचाने वाला समझता है, और हर चिकने पत्थर और हर ऊँचे दरख़्त को मअ़बूद बना लेता है, और हर घनी झाड़ी, हर सुनसान, मक़ाम हर बहते दरिया हर ऊँचे पहाड़ और हर ज़रर रिसाँ और नफ़ा बख़्श ताक़त उस को बन्दग़ी की दअ़वत देती है और उन में से किसी के सामने भी उस को अपने नफ़्स को ज़लील करने में कोई ग़ैरत नहीं लाहि़क़ होती।

वह एक मर्तबः अपने मक़ामे इ़ज़्ज़त से गिरकर बराबर गिरता ही चला जाता है और इस शर्फ़ को बिलूकुल खो देता है जिस से वह अल्लाह तआ़ला ने उस को सरफ़राज़ किया था, यही ह़क़ीक़त है जो सूरः ह़ज की इस आयत में बयान हुई है।

لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ۭ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝

'उसके' साथ किसी को साझीदार न ठहराओ, और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझीदार ठहराता है, तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा, फिर चाहे उसे पक्षी उचक ले जाएँ या हवा उसे किसी दूर जगह फेंक दे। **(सूरः ह़ज-३१)**

तमाम मख़्लूक़ अल्लाह को सज्दः करती है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَاۗبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۭ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۭ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاۗءُ ۝ [सज्दः]

क्या तुमने देखा नहीं! कि अल्लाह ही को सज्दः करते हैं, वे सब जो आसमानों में हैं, और जो ज़मीन में है, और सूरज-चाँद, तारे, पहाड़, वृक्ष, जानवर,। और बहुत से इन्सान ऐसे हैं जिन पर अ़ज़ाब तय हो चुका, और जिसे अल्लाह अपमानित करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है। **(सूरः ह़ज-१८)**

ईमान की ताक़त-

तौह़ीद की चमक आते ही अचानक उस की ह़ालत में ऐसा इन्क़िलाब अ़ज़ीम आ जाता है कि वही इन्सान जिस को हम ने इस ह़ाल में देखा था वह इस दुनिया की हर चीज़ से नीचे था। इस क़दर बुलन्द हो जाता है कि ख़ुदा के सिवा हर चीज़ उस के नीचे आ जाती है इस तब्दीली की बेहतरीन मिसाल हमें ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) और उन से मुक़ाबिला करने वाले जादूगरों में मिलती है।

जिन जादूगरों को फ़िरऔ़न ने इकट्ठा किया था, घड़ी भर पहले उन का यह ह़ाल था कि मैदान में मुक़ाबिला में उतरने से पहले अपनी मज़दूरी की तरफ़ से इत्मिनान कर लेना चाहते हैं और ख़ुशामदाना अन्दाज़ में इल्तिज़ा करते हैं **اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ** (सरकार! हम फ़तेह़मन्द रहे तो मज़दूरी भरपूर मिलेगी ना!) लेकिन ज़्यादा देर नहीं गुज़रती कि तौह़ीद की एक रोशनी पड़ते ही उन की तबीअ़त में ऐसी तब्दीली आती है कि फ़िरऔ़न उन को ईमान लाने पर सख़्त से सख़्त सज़ा की धमकी देता है और कहता है कि मैं तुम्हारे हाथ पांव काट कर तुम को सूली पर लटका दूँगा।

लेकिन उन पर इस धमकी का कोई असर नहीं होता और वह बेधड़क जवाब देते हैं, कुछ परवाह नहीं, हम अपने रब के पास ही जाएँगे तुम्हें जो कुछ करना है कर लो, तुम्हारा ज़ोर बस इसी दुनिया की ज़िन्दग़ी में चल सकता है

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاۗءَتْنَا ۭ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ

इस की वजह यह है कि एक पक्के ईमान वाले पर यह राज़ खुल जाता है कि दुःख हो या सुख, ज़िन्दग़ी हो या मौत, हर एक के आने और जाने का रास्ता एक ही है। बस वह उम्मीदों में एक ही से उम्मीद रखता और उसी से डरता है।

वह जानता है कि यह दुनिया मुख़्तलिफ़ देवताओं की आमाजगाह नहीं है, एक ही अज़ीम व हकीम से जो अपनी क़ुदरत व हिकमत से इस कारख़ाने को चला रहा है और मुम्किन नहीं है कि उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस आलम के मामलात में कोई एक ज़र्रह बराबर दख़्ल दे सके वह यह भी जानता है कि इस आलम का ख़ालिक़े हक़ और मुहिब्बे हक़ है।

हक़ की हैसियत–

बातिल की हैसियत इस दुनिया में तुफ़ैली की है जो हक़ के साथ लग जाता है, वह भी हक़ ही की ख़िदमत करता है जिस पर यह राज़ खुल गया उस ने दुनिया जहान की दौलत पा ली। उस का ख़ज़ाना लाज़वाल, और उस की ज़िन्दगी ग़ैरफ़ानी है। वह न तो कभी परेशान होता है, न कभी उस को तन्हाई दुःख देती है, वह एक सदाबहार दरख़्त से खाता और एक हमेशा जारी रहने वाले चश्मे से आस्वदह हाल रहता है।

कलिमा तय्यिबा की मिसाल–

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ

क्या आप ने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल 'कलिम-ए-तय्यिबः' की दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ जमी हुई, और शाखाएँ आसमान में फैली हुई हों; अपने रब की इजाज़त से वह अपना फल दे रहा हो; और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है, ताकि वह खूब समझ लें। **(सूरः इब्राहीम–२४,२५)**

यही लोग हैं जिन का दिमाग़ मुसीबत व राहत हर हाल में संतुलित रहता है और तंगी व फ़राख़ी की कोई हालत उन के दिल के इत्मिनान को दरहम-बरहम नहीं करती। न वह घबराते, न मायूस होते, न वह अकड़ते और न वह फ़ख़्र करते जिस तरह वह आराम की घड़ियों का इस्तिक़बाल करते हैं उसी आज़माईशों

और मुसीबतों का भी ख़ैर मक़दम करते हैं।

तौहीद बुनियाद है–

इस्लाम की बुनियाद तौहीद पर रखी गयी है, यानी सिर्फ़ अल्लाह को रब और क़ानून देने वाला माना जाए, दूसरों के लिए इस में किसी तरह की हिस्सेदारी न हो और ख़ानदान की बुनियाद वहदत आदम के तसव्वुर पर रखी जाए, यानी तमाम नस्ले इन्सानी एक ही आदम से है, किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं हासिल होगी मगर दीन और तक़वा की वजह से। पहली चीज़ ने ख़ुदाओं की तअदाद और क़ानून साज़ी और हुक्मरानी के दावेदारों के झगड़े से दुनिया को निजात दी, और दूसरी चीज़ ने ख़ानदान और नस्ल व नस्ब के सारे घमंडों को बातिल कर दिया।

सारे इन्सान एक ख़ुदा के बन्दे और एक के बेटे

सारे इन्सान एक ख़ुदा के बन्दे और एक आदम के बेटे बन गये, काले और गोरे और अज्मी में कोई फ़र्क़ नहीं रहा। सब के लिए एक ही क़ानून और एक ही निज़ाम है। सब के लिए यकसाँ (एक जैसा) अम्न है यकसाँ अद्ल है, यकसाँ जद्दोजेहद का मैदान है, यकसाँ हक़ है और यकसाँ ज़िम्मेदारी है, यहाँ किसी नस्ल के मुतअल्लिक़ यह ख़याल क़ायम कर लेना कि वह पैदाईशी गुलाम है शायद गुनाह है, यहाँ एरियन और सामी नस्ल के दर्मियान किसी क़िस्म का फ़र्क़ करना फ़साद फ़िल् अर्ज़ है।

यहाँ रेड इन्डियन को महज़ रंग की बुनियाद पर हुक़ूक़ से महरूम करना ज़ुल्म कबीर है, इस निज़ाम में सिर्फ़ वह लोग समानता के हुक़ूक़ से महरूम हैं जो इन उसूलों के मुन्किर हैं। इस की वजह यह है कि यह लोग इन्सानियत के अम्न व अद्ल के दुश्मन हैं वह ज़मीन में फ़साद चाहते हैं और इन्सानी मुआशरे की इन असासात को ख़त्म कर देना चाहते हैं जिन से महरूम होकर दुनिया कभी चैन नहीं हासिल कर सकती।

आज जो लोग दुनिया के नये-नये निज़ाम की तलाश में फिर रहे हैं वह जब तक तौहीद की हक़ीक़त न समझ लें वह कोई ऐसी बुनियाद नहीं क़ायम कर सकते, जिस पर तमाम इन्सानों के भाईचारे की इमारत क़ायम हो सके।

इन्सान के लिए यह बात तो बिल्कुल फ़ित्री है कि वह खुदा की बन्दगी व इताअ़त करे। यह बात ऐसी है जिस की दअ़वत तमाम बनी आदम को यकसाँ दी जा सकती है और हर सलीमुल (नेचुरल) फ़ित्रत इन्सान चाहे वह किसी क़ौम व नस्ल से तअ़ल्लुक़ रखता हो बग़ैर किसी अ़सबियत के इस दअ़वत को क़ुबूल कर सकता है। उस के अन्दर फ़ित्रते इन्सानी के लिए एक क़ुदरती कशिश है।

दीन में तौहीद की अहमियत

दीन में तौहीद को वही जगह हासिल है जो जिस्म इन्सानी में दिल को हासिल है। अगर दिल बीमार है तो सारा जिस्म बीमार है और अगर दिल तंगदस्त है तो सारा जिस्म तंगदस्त है। यही राज़ है कि तौहीद के बग़ैर आदमी का कोई अ़मल मक़बूल नहीं है और तौहीद के साथ हर ग़लती के बख़्शे जाने की तवक़्क़ो है। चुनांचे फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला शिर्क को माफ़ नहीं फ़रमाएगा और उस के सिवा जिसे चाहेगा माफ़ फ़रमाएगा।

तौहीद की इस अहमियत की वजह यह है कि सारे दीन की इमारत तीन चीज़ों पर क़ायम है, तौहीद, रिसालत, आख़िरत जिस के मअ़ने यह हैं कि तौहीद सारे दीन का एक तिहाई हिस्सा है, यही वजह है कि सूरः इख़्लास को जो ख़ालिस तौहीद की सूरह है तिहाया क़ुर्आन कहा गया है, लेकिन अगर मज़ीद ग़ौर कीजिए तो मालूम होगा कि रिसालत और आख़िरत भी तौहीद के तहत आते हैं।

रिसालत का जुज़्व तौहीद होना यूँ साबित है कि खुदा ही को क़ानून साज़ मानना भी तौहीद में से है और अल्लाह तआ़ला अपने अहकाम व क़वानीन अपने रसूल के ज़रिये से भेजता है।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की इताअ़त तौहीद का हिस्सा है-

यह हक़ीक़त पूरी तरह वाज़ेह है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को रसूल

और ज़िन्दगी के हर शोबे में इताअ़त को वाजिब मानना तौहीद का जुज़ है। जो शख़्स अल्लाह को एक कहता है लेकिन हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शरीअ़त की पैरवी का इन्कार करता है वह मुश्रिक है। उस का तौहीद से कोई सरोकार नहीं है।

आख़िरत तौहीद की रुह है

बाक़ी रहा आख़िरत का मस्ला तो वह तौहीद के तहत मुख़्तलिफ़ पहलुओं से दाख़िल है। आख़िरत तौहीद के सिफ़ात का लाज़मी तक़ाज़ा है कि आख़िरत की सारी रुह तौहीद है। जो लोग आख़िरत के क़ायल हैं, लेकिन साथ ही साझीदार व सिफ़ारशी को भी मानते हैं, जो उन के गुमान के मुताबिक़ उन को बख़्शवा लेंगे उन के लिए आख़िरत का अ़क़ीदा बिलकुल बेजान है। वह खुदा के सामने जवाबदही की ज़िम्मेदारी और उस के क़ानूने अ़द्ल के ज़ुहूर से वैसे ही बेख़ौफ़ हो जाते हैं जैसे आख़िरत के मुन्किरीन।

चुनांचे अहले अ़रब और यहूद व नसारा का यही हाल था, उन्होंने आख़िरत की सारी अहमियत शिफ़ाअ़त व कुफ़्फ़ारा के अ़क़ीदे से बातिल कर दी थी और यही हाल मुसलमानों के गिरोहों का है। यही वजह है कि क़ुर्आन मजीद में तौहीद और आख़िरत का बयान अक्सर साथ-साथ होता है।

इससे मालूम हुआ कि दीन का सारा निज़ाम तौहीद से रौशन है। इस जिस्म की रुह और उस आँख की पुतली तौहीद है। उस के बग़ैर न कोई अ़क़ीदा असरदार है, न कोई अ़मल अ़सर करने वाला। यहीं से दीन का पहला क़दम उठता है और फिर यहीं उसका आख़िरी क़दम पड़ता है यह दीन का दायरा है और दीन उसी वक़्त तक महफ़ूज़ है जब तक इस दायरे के अन्दर है। यही वजह है कि सूरः बनी इस्राईल में जहाँ दीन फ़ितरत के अहकाम व क़वानीन की तअ़लीम दी गयी है उस का आग़ाज़ لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ (अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को शरीक न करो) से किया।

तौहीद में नर्मी नहीं

तौहीद की इसी अहमियत की वजह से हम देखते हैं कि दुनिया में जितने अम्बिया आए सब ने अपनी दअ़वत का आग़ाज़ तौहीद से किया और इस नुक़्ते पर इस तरह़ जमे कि किसी ह़ाल में उस से बाल बराबर सरकने पर राज़ी न हुए।

मुख़ालिफ़ीन ने लाख चाहा, कि पैग़म्बर इस मामले में थोड़ी सी चापलूसी गवारा कर ले, ज़रा अपने रवैये में नर्म हो जाएँ कम से कम उन के बुतों की तह़क़ीर ही से बाज़ आ जाएँ जो आगे बढ़ कर उस से समझौता कर लें (وَدُّوْا لَوْتُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ) लेकिन पैग़म्बर ने एक लम्ह़े के लिए इस में किसी क़िस्म की नर्मी गवारा नहीं की।

उन्होंने उस को डराना चाहा और वह सब कुछ कर डाला जो उन के बस में था लेकिन उस को उस की जगह से हिला न सके। उन्होंने तर्ग़ीब के फंदे डाले और रिश्वत में सब कुछ पेश किया जो पेश कर सकते थे लेकिन वह पीछे नहीं हटे।

मुख़ालिफ़ीन की तद्बीरें-

इ़ज़्ज़तदार घराने में शादी, दौलत के ढ़ेर, सरदारी सारी ही चीज़ें पेश की गईं, लेकिन इन सारी तर्ग़ीबों के जवाब में उनके सामने वही तौहीद की दअ़वत पेश की गई, जब उन तद्बीरों में नाकाम रहे, तो मुख़ालिफ़ीन ने आख़िरी ह़र्बा उठा लिया और पैग़म्बर और उस के साथियों को मजबूर कर दिया कि वह अपने घर को, अपने ख़ानदान को, अपनी इम्लाक व जायदाद को, और अपने मुल्क व वतन को छोड़ दें। ख़ुदा के हर नबी ने इस को भी गवारा कर लिया।

क़ुर्आन हमारे सामने मौजूद है इस में तमाम अम्बिया-ए-किराम की हिजरत बयान की गई हैं। हर नबी की ज़बान पर अपनी क़ौम को छोड़ते वक़्त जो आख़िरी कलिमा जारी होता है वह तौहीद का कलिमा होता है। यही चीज़ है जिस के लिए वह सब कुछ छोड़ता है और सब को छोड़कर चुनता है, ग़ौर कीजिए, ऐसा क्यों है?

तौहीद के लिए दुश्मनी

क्या बात है कि इन्सान सब को छोड़ दे मगर तौहीद पर ह़र्फ़ न आने दे? बद्र में बाप ने बेटे पर, चचा ने भतीजे पर, मामूँ ने भाँजे पर, भाई ने भाई पर तौहीद की ख़ातिर तलवार चलाई, इसलिए कि बीवियों ने शौहरों से और शौहरों ने बीवियों से जुदाई अख़्तियार कर ली, अ़ज़ीज़ से अ़ज़ीज़ क़रीबी और मज़बूत से मज़बूत रिश्तों पर क़ैंची चल गई और उन लोगों के हाथों से चल गई जो इन्सानियत के नाम लेवा थे, जो रह़म व मुह़ब्बत और अख़्लास के पैकर थे, जिन से बढ़कर अपनी क़ौम से, अपने क़बीले से, अपने अ़ज़ीज़ों से और फिर आ़म इन्सानों से मुह़ब्बत करने वाले लोग इस ज़मीन पर पैदा नहीं हो सकते।

ह़ज़रत मूसा (अ़लै०) की क़ौम के कुछ लोग गौ साला परस्ती करते हैं तो वह हुक्म देते हैं कि जिस क़बीले का मुजरिम है उसी क़बीले के लोग उसे क़त्ल कर दें اُقْتُلُوْا اَنْفُسَكُمْ और बद्र के क़ैदियों के मुताल्लिक़ फ़ारूक़े आ़ज़म (रज़ि०) यह मशवरा देते हैं कि हर शख़्स अपने अ़ज़ीज़ पर ख़ुद अपने हाथ से तलवार चलाए।

अल्लाहु अकबर! तौहीद का ह़क़ यह है कि आदमी का एक हाथ, अगर उस की हुरमत का बट्टा लगाए तो उस का दूसरा हाथ उस से इन्तिक़ाम लेने में ज़र्रह बराबर रह़म व मुरव्वत को दख़्ल न दे।

ख़ुदा के ह़क़ का इक़रार-

तौहीद सब से बड़े ह़क़ यानी ख़ुदा के ह़क़ का इक़रार है। यही अ़द्ल की बुनियाद है, जो शख़्स इस पर ह़क़ को नहीं पहचानता वह किसी के भी ह़क़ को नहीं पहचान सकता। यहाँ तक कि वह अपने नफ़्स के ह़क़ को भी नहीं पहचानता। इस से उसी तरह़ की नाइन्साफ़ियों का ज़ुहूर में होगा। जैसा कि मौजूदा ज़माने के ज़ालिम और नाशुक्रगुज़ार इन्सानों से ज़ुहूर में आ रही हैं।

अम्बिया-ए-किराम जो अक्सर ह़क़ और इन्साफ़ की दअ़वत होते हैं वह तौहीद के मामले में किसी क़िस्म की चापलूसी क्योंकर गवारा कर सकते हैं जबकि

तौहीद ही तमाम हुकूक़ की बुनियाद है। वह इस मामले में न बाप को माफ़ कर सकते, न चचा को, न बेटे को न बीवी को। जो चीज़ भी इस हक़ की अदायगी में मानेअ़ हो वह एक पत्थर है और ज़रूरी है कि उस पत्थर को राह से हटा दिया जाए।

तौहीद ख़ालिस का क़याम–

बस अम्बिया-ए-किराम की सारी जद्दोजेहद का मक़्सद तौहीदे ख़ालिस का क़याम है वह दुनिया में इसी लिए आते हैं कि ख़ुदा के बन्दों को दूसरों की बन्दगी से छुड़ा कर ख़ालिस ख़ुदा का बन्दा बना दें। वह उसी को ख़ालिक़ मानें, उसी को बादशाह कहें, उसी की बन्दगी करें, उसी की इताअ़त करें, उसी पर एतिमाद तवक्कुल (भरोसा) करें, उसी से तालिबे मदद हों, नेअ़मत मिले तो उसी का शुक्र अदा करें, मुसीबत आए तो उसी से मदद चाहें।

तमअ़, ख़ौफ़, उम्मीद, हर हाल में उन की नज़र उसी की तरफ़ हो वह अपने आप को उस के हवाले कर दें। उन की मुहब्बत उस की मुहब्बत के ताबेअ़, उन की पसन्द उसकी पसन्द के तहत हो, उस की ज़ात में, उस की सिफ़ात में, उस के हुकूक़ में, उस को एक मानें और किसी पहलू से इन चीज़ों में किसी को शरीक न ठहराएँ। न किसी फ़रिश्ते को, न किसी जिन्न को, न किसी नबी को, न किसी वली को, न किसी और को, न अपनी ज़ात को।

तौहीद की हक़ीक़त वाज़ेह हो जाने के बाद यह बात बिलकुल साफ़ हो गई कि अस्ल हक़ीक़त के एतिबार से तौहीदे दीन का सिर्फ़ एक जुज़ नहीं है बल्कि यह सारे दीन पर हावी है।

इस तरह तौहीद को समझने के बाद हमारे लिए ज़रूरी है कि हम अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारें, ताकि दुनिया की ज़िन्दगी भी सुकून की हो और मरने के बाद की ज़िन्दगी राहत और चैन से गुज़रे।

तौहीद के ख़िलाफ़ बातें

इल्म ग़ैब का मतलब

ग़ैब का मतलब– भूत और भविष्य की जो चीज़ें लोगों से गायब व पोशीदा हों या आँखों से ओझल हों उन्हें ग़ैब कहा जाता है, उन का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही को है। ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ

कह दीजिए, "आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के।

(सूरः नम्ल-६५)

ग़ैब का कुछ इ़ल्म–

ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है, फिर वह अपने इस ग़ैबी इ़ल्म में से अपने अम्बिया व रसूलों में से जिस को चाहता है उस को हिकमत व मसलहत के अनुसार अ़ता करता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

(वह) ग़ैब (परोक्ष) का जानने वाला है, और 'वह' अपने ग़ैब को किसी पर ज़ाहिर नहीं करता; सिवाय उसके जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसंद कर लिया हो।

(सूरः जिन्न- २६-२७)

यानी ग़ैबी उमूर में से कुछ का इल्म सिर्फ़ उसी व्यक्ति को अ़ता करता है,

जिसे अल्लाह तआ़ला अपनी रिसालत के लिए चुन लेता है, लिहाज़ा उस चुनिंदा व नेक बन्दे पर जितना चाहता है इल्म ग़ैब अ़ता करता है।

इसलिए कि एक नबी को मोअ़जिज़ात के ज़रिए अपनी नुबूव्वत की दलील पेश करनी पड़ती है, उन्हीं मोअ़जिज़ात में से इस ग़ैब की ख़बर देना भी है जिस पर अल्लाह तआ़ला उस को बता देता है, उस चीज़ में अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते व इन्सान दोनों बराबर हैं, क़ुर्आन व ह़दीस के वाज़ेह दलायल की बुनियादों पर कहा जा सकता है कि कोई तीसरी मख़्लूक़ इस में नहीं है।

इल्म ग़ैब किसको–

अगर किसी को किसी भी वजह से इल्म ग़ैब का दावा है तो वह झूठा है, चाहे उस का दावा हथेली पढ़ कर हो या प्याली पढ़ कर या फिर कहानत व जादू और इल्म नुजूम वग़ैरह के ज़रिए इस तरह़ की चीज़ें आज बहुत फ़रेबी लोगों की तरफ़ से सामने आ रही हैं, जो उमूमन गुमशुदह चीज़ों के बारे में ख़बर देने की कोशिश करते हैं, बाज़ मर्ज़ के ग़लत अस्बाब बताते हैं।

उ़मूमन जिन का कहना होता है, फ़लां ने तुम को कुछ कर दिया है लिहाज़ा उस की वजह से तुम बीमार पड़े हो, ऐसा जिन्न व शयातीन की ख़िदमत ह़ासिल करने पर भी होता है, लेकिन लोगों के सामने इस का इज़हार करते हैं कि फ़लां-फ़लां अ़मल के ज़रिए यह सब कुछ बताया जा रहा है, इस तरह़ की सारी चीज़ें सरासर फ़रेब व झूठ हैं।

भविष्य की बातें मालूम करना–

हमारे यहाँ कुछ अनपढ़ और कमज़ोर ईमान वाले इस तरह़ के नुजूमियों के पास जाते हैं, उन से अपनी ज़िन्दगी के मुस्तक़बिल के बारे में मालूम करते हैं, शादी के मुतअ़ल्लिक़ भी भविष्य की बातें मालूम करने की कोशिश करते हैं।

जबकि इस सिलसिले में शरीअ़त का वाज़ेह बयान है कि जो कोई भी इल्म ग़ैब का दावा करेगा या दावा करने वाले की तस्दीक़ करेगा वह सरासर मुश्रिक

और काफ़िर होगा, इसलिए कि इस तरह़ वह अल्लाह तआ़ला की ख़ास सिफ़ात में शिरकत का दावा करता है, सितारे अल्लाह तआ़ला के मुतीअ़ व फ़रमाबरदार मख़्लूक़ हैं, उन के बस में कुछ भी नहीं है, वह नेक फ़ाल व बद्फ़ाल, मौत व ह़यात किसी चीज़ पर दलालत नहीं करते, यह सब उन शयातीन की ह़रकते हैं जो आसमान की ख़बरें चुराने की कोशिश करते हैं।

सहर (जादू) एक सिफ़्ली अ़मल है

सहर को सह़र इसलिए कहा जाता है कि यह सिफ़ली आ़माल के वजूद में आने का ज़रिया है, जिसे हमारी आँखें नहीं देख सकतीं। सह़र में मन्त्र, झाड़ फूंक, कुछ कलिमात, जड़ी बूटी व धूनी वग़ैरह सब शामिल होते हैं। सह़र के वजूद में कोई शक नहीं, बाज़ सह़र दिलों में असर करता है और बाज़ जिस्मों में, जिस के असर से आदमी बीमार हो जाता है और बाज़ मर भी जाते हैं, इस से इन्सान और उस की बीवी के दर्मियान तफ़रीक़ भी कर दी जाती है। सह़र का असर अल्लाह तआ़ला की तक़दीरी कायनाती इजाज़त से है, यह सरासर शैतानी अ़मल है।

बाज़ लोग तो सह़र सीखने के लिए शिर्क और अरवाह़ से तक़र्रुब के बहुत से मराह़िल तय करते हैं, फिर शिर्क के ज़रिए उन अरवाह़ की ख़िदमत ह़ासिल करते हैं, इसलिए शरीअ़त ने शिर्क में इस का तज़किरह किया है, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"सात मोहलिक चीज़ों से बचो, लोगों ने सवाल किया यह सात चीज़ें क्या है? ऐ अल्लाह के रसूल! तो आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः अल्लाह के साथ किसी को शरीक करना और सह़र।" **(बुख़ारी व मुस्लिम)**

जादू शिर्क है–

सह़र दो एतिबार से शिर्क में दाख़िल है।

(१) इस में शयातीन की ख़िद्मत ह़ासिल की जाती है, शयातीन से तअ़ल्लुक़ क़ायम किया जाता है, शयातीन की ख़िद्मत में उन की मह़बूब व मरग़ूब चीज़ें

पेश की जाती हैं, ताकि वह जादूगर की ख़िद्मत में लगा रहे, जादू शयातीन की तअ़लीमात में से है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

وَلَٰكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ

बल्कि शैतान ही कुफ़्र करते थे, लोगों को जादू सिखाते थे। **(सूरः बकरः– १०२)**

इल्म ग़ैब का दावा–

(२) इस के शिर्क होने की दूसरी दलील यह है कि इस में इल्म ग़ैब का दावा किया जाता है और इस में अल्लाह तआ़ला के साथ शरीक होने का भी दावा होता है, जो सरासर कुफ़्र व गुमराही है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ

और वह जानते थे कि जो शख़्स ऐसी चीज़ों (यानी सहर और मन्त्र वग़ैरह) का ख़रीदार होगा उस का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं।

(अल् बक़रः–१०२)

जब मामला ऐसा है तो इस में कोई शक नहीं कि यह सरासर कुफ़्र व शिर्क है जो इस्लामी अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है।

इन दोनों में इल्म ग़ैब और ग़ैबी उमूर से वाक़फ़ियत का दावा किया जाता है, जैसे आइन्दा क्या होने वाला है फिर इस का क्या नतीजा निकलेगा, गुमशुदा चीज़ कहाँ है वग़ैरह, इन सब उमूर में शयातीन की ख़िद्मत हासिल की जाती है ख़ासतौर पर उन शयातीन की जो आसमानों से ख़बरें चुराते हैं।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ۝ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ ۝

क्या 'मैं' तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं? हर ढ़ोंग रचने वाले गुनहगार पर उतरते हैं; वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर लोग झूठे होते हैं।

(सूरः शूरा–२२१,२२२,२२३)

यह सब कुछ इस तरह़ होता है कि शैतान फ़रिश्तों की बातों में से कुछ चोरी छिपे सुन लेता है और काहिन के कान में डाल देता है, फिर काहिन इस बात में अपनी तरफ़ से सौ झूठ मिलाकर बयान करता है, फिर लोग इस एक सच बात की वजह से उस की सारी झूठ को सच मान लेते हैं।

जब कि इल्म ग़ैब का इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को है, लिहाज़ा कोई अगर दावा करता है कि कहानत या दीगर ज़राए से वह इस इल्म में अल्लाह तआ़ला का शरीक है या ऐसा कहने वाले की तस्दीक़ करता है तो वह अल्लाह तआ़ला के लिए साझीदार का इक़रार करता है, ख़ुद कहानत शिर्क से खाली नहीं, इसलिए कि इस में शयातीन को उस की मह़बूब चीज़ें पेश की जाती हैं, यह अल्लाह तआ़ला की रुबूवियत (पालनहार होने) में शिर्क है, इसलिए कि इस में अल्लाह तआ़ला के इल्म में शिरकत का दावा किया जाता है, यह अल्लाह तआ़ला की उलूहियत (एकेश्वरवाद) में भी शिर्क है इसलिए कि इस में इबादत के ज़रिए ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब ह़ासिल किया जाता है।

मज़ारात पर नज़रो–नियाज़

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने शिर्क के सारे रास्ते बन्द फ़रमा दिये हैं और शिर्क और शिर्किया आ़माल से बड़ी ताकीद के साथ मुसलमानों को बाख़बर कर दिया है, इस सिल्सिले का एक दरवाज़ा मक़ाबिर हैं, लिहाज़ा क़ब्र पर जाने और वहाँ दुआ़ करने के ऐसे तरीक़े बना दिये हैं कि हर आदमी शिर्क से मह़फ़ूज़ हो जाए, इसी तरह़ औलिया व सालिह़ीन की मुह़ब्बत व अ़क़ीदत में ग़ुलू से उम्मत को बाख़बर फ़रमा दिया है।

१– औलिया व सालिह़ीन की अ़क़ीदत में ग़ुलू से ख़बरदार किया गया है, इसलिए कि उनकी अ़क़ीदत में ग़ुलू होते–होते उन की इबादत होने लगती है इर्शादे नबवी हैः –

"ग़ुलू से बचो इसलिए कि तुम से पहले जो हलाक हुए वह दीन में ग़ुलू करने की वजह से ही हलाक व बर्बाद हुए हैं।" **(इब्ने माजा)**

एक जगह और इर्शाद हैः–

"मेरी तअ़रीफ़ में गुलू व मुबालिग़ा न करो जैसा कि नसारा ने इब्ने मरयम के लिए किया, इसलिए कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, लिहाज़ा मुझे अल्लाह का बन्दा और उस का रसूल से पुकारो।" **(बुख़ारी)**

क़ब्रों को पुख़्ता न बनाओ–

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़ब्रों को पुख़्ता बनाने और उस पर तामीर करने से सख़्ती के साथ रोका है, "ह़ज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि उन का कहना है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़ब्र को पुख़्ता बनाने और उस पर बैठने या उस पर छत तामीर करने से मना फ़रमाया है।" **(मुस्लिम)**

क़ब्रों को सज्दागाह बनाना मना है–

क़ब्रों के पास नमाज़ पढ़ने से भी रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मना फ़रमाया है, ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब मर्ज़ुल वफ़ात में मुब्तिला हुए तो आप (सल्ल०) बराबर अपनी चादर मुँह पर डाले रहते, जब इस से तकलीफ़ मह़सूस करते तो खोल देते, इस ह़ालत में आप (सल्ल०) ने फ़रमायाः–

"यहूद व नसारा पर अल्लाह की लअ़नत हो कि उन्होंने अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लिया", आप (सल्ल०) अपनी उम्मत को इस चीज़ से ख़बरदार फ़रमा रहे थे अगर ऐसा न होता तो आप अपनी क़ब्र को नुमायाँ फ़रमाते लेकिन आप (सल्ल०) को डर था कि लोग उसे सज्दागाह न बना लें। **(बुख़ारी, मुस्लिम)**

अच्छी तरह सुन लो कि तुम से पहले की क़ौमें अपने अम्बिया की क़ब्रों को सज्दागाह बना लेती थीं। ख़बरदार क़ब्रों को सज्दागाह न बनाना, मैं तुम्हें इस चीज़ से रोक रहा हूँ। **(मुस्लिम)**

क़ब्रों को मस्जिद बनाने का साफ़ मतलब है क़ब्रों पर नमाज़ पढ़ना, चाहे उस पर मस्जिद न हो, लिहाज़ा हर वह जगह जिसे नमाज़ के लिए मख़्सूस की जाएगी वह मस्जिद हो जाएगी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः–

पूरी ज़मीन सज्दःगाह है–

पूरी ज़मीन मेरे लिए सज्दागाह और पाकीज़ह बना दी गई है। **(बुख़ारी)**

अक्सर लोगों ने इन अह़कामात की मुख़ालिफ़त की है और रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जिन चीज़ों से रोका है उन का इरतिकाब किया है, इस तरह़ वह शिर्के अकबर व आ़माले शिर्किया में मुब्तिला हो गये हैं। क़ब्रों पर मसाजिद, मज़ारात बना लिए हैं और उन पर शिर्क अकबर के आ़माल हो रहे हैं, अस्ह़ाबे क़ब्र से मन्नत व मुनाजात व दुआ़ व इस्तिग़ासा सब कुछ हो रहा है।

जबकि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मज़ार के पास नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया है, लेकिन यह लोग वहाँ ज़रुर नमाज़ पढ़ते हैं, उन्हें सज्दागाह बनाने से रोका है, लेकिन यह ज़रुर सज्दागाह बनाते हैं, और उन्हें कोई यादगार नाम देते हैं, ताकि उन्हें अल्लाह तआ़ला के घर के मुक़ाबिल बना दें, क़ब्रों पर चिराग़ जलाने से रोका गया है, लेकिन यह लोग क़ब्रस्तान में चिराग़ां करते हैं, बल्कि क़ब्र पर चिरागां करने के लिए ज़ायदाद तक वक्फ़ कर देते हैं। क़ब्रस्तान या क़ब्र से मुतअ़ल्लिक़ जश्न मनाने या ख़ुशी का दिन मनाने से सख़्ती के साथ रोका गया है, लेकिन यह ह़ज़रात ठीक ईद व बक़रीद की तरह़ मक़ाबिर व मज़ारात में ईद व जश्न का उ़र्स मनाते हैं, यह सब ग़लत है।

शिर्क का अर्थ

शिर्क का अर्थ होता है, साझीदार बनाना अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझीदार बनाना और पारिभाषिक अर्थ होता है-

"अल्लाह की ज़ात या उसकी सिफ़तें जिस माना में उस के लिए इस्तिमाल हुई हैं, किसी और के लिए इस्तिमाल करना या अल्लाह की रुबूबियत, उलूहियत में, या किसी को उसके हुकूक़ में साझी ठहराना शिर्क है।"

शिर्क का मतलब

अल्लाह की ज़ात में साझीदार ठहराने का मतलब यह है कि अल्लाह को किसी के या किसी को अल्लाह के बराबर ठहराना, किसी को उसकी ज़ात बिरादरी समझना, किसी को उसका बाप या बेटा कहना- जैसे ईसाइयों को अक़ीदा है कि मसीह़ अल्लाह के बेटे हैं, या ह़ज़रत मरयम अल्लाह की माँ हैं- या कुछ लोगों का अक़ीदा है कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं, इस तरह की बातें अल्लाह की ज़ात में बनाना शिर्क है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝

'वह कहेगा, "जिन्नों और इन्सानों के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं, उन्हीं के साथ तुम भी दाख़िल हो जाओ।" जब भी कोई गिरोह दाख़िल होगा, तो वह अपनी बहन (अर्थात अपने जैसे दूसरे गिरोह) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें जमा हो जाएँगे तो उनमें से बाद में आने वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, 'ऐ हमारे रब! हम को इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था; तो 'तू' इन्हें आग का दोगुना अ़ज़ाब दे।" वह कहेगा, "हर एक के लिए दोगुना ही है, लेकिन तुम नहीं जानते," **(सूरः आराफ़-३८)**

शिर्क सब से बड़ा ज़ुल्म

अल्लाह की सिफ़ात में मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के बराबर क़रार देने का साफ़ मतलब है कि मख़्लूक़ को ख़ालिक़ के बराबर क़रार देना, जो सब से बड़ा ज़ुल्म है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝

शिर्क बड़ा (भारी) ज़ुल्म है। **(सूरः लुक़मान-१३)**

ज़ुल्म कहते हैं किसी चीज़ को उस के अस्ल मक़ाम से हटा कर दूसरी जगह पर रखना, लिहाज़ा जिस ने ग़ैरुल्लाह की इबादत को अपनी अस्ल जगह से हटा कर इस्तेमाल किया और एक ग़ैर मुस्तह़िक़ की तरफ़ फेर दिया तो यह सब से बड़ा ज़ुल्म है।

शिर्क-

अल्लाह तआ़ला ने साफ़ तौर पर फ़रमा दिया कि शिर्क करने के बाद जो तौबः नहीं करेगा उस की मग़्फ़िरत नहीं होगी।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى

अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को उसका साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा। **(सूरः निसा-४८)**

मुशिरक पर जन्नत ह़राम है-

अल्लाह तआ़ला ने इस की भी ख़बर दी है कि उस ने मुशिरक पर जन्नत ह़राम कर दिया है और यह कि मुशिरक हमेशा-हमेश के लिए जहन्नम में पड़ा रहेगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝

जो व्यक्ति अल्लाह के साथ साझी ठहराएगा, उस पर अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग (जहन्नम) है, और ज़ालिमों का कोई मदद्‌गार नहीं।''

(सूरः अल्‌ माइदा- ७२)

शिर्क पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है-

शिर्क इन्सान के तमाम पिछले आ़माल को ख़त्म कर देता है। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और अगर उन लोगों ने कहीं अल्लाह का साझीदार ठहराया होता! तो उनका सब किया धरा बरबाद हो जाता। **(सूरः अन्आ़म-८८)**

और एक जगह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

और आप की ओर, जो आप से पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्‌य की जा चुकी है, ''अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा सब अकारथ हो जाएगा और तुम घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।'' **(सूरः ज़ुमर-६५)**

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ ۖ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ۝

और इसी तरह 'हमने' इन्सानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के मन में डाल कर धोखा देते थे और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा काम न करते, तो अब उनको छोड़ दो, जो कुछ वे गढ़ते हैं।

(सूरः अन्आ़म-११२)

अल्लाह के अ़लावा किसी दूसरे को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

कह दीजिए, ''क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की अ़िबादत करते हो जो न तुम्हें फ़ायदा पहुँचाने की मालिक है और न नुक़सान? और अल्लाह ही खूब सुनने, जानने वाला है।" **(सूरः माइदा-७६)**

जिनकी पूजा की जाती है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَٰؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝

और जिस दिन (अल्लाह) इन सब लोगों को इकट्‌ठा करेगा, फिर फरिश्तों से कहेगा, "क्या यही थे जो तुम्हारी पूजा किया करते थे?'' **(सूरः सबा-४०)**

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ ۖ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ

वे कहेंगे, ''तू पाक है हमारा सम्बन्ध तो केवल तुझसे ही है, न कि इनसे, बल्कि यह लोग जिन्नात की पूजा किया करते थे,

इनमें से, अक्सर यक़ीन भी इन्हीं (जिन्नों) पर रखते थे। (सूरः सबा-४१)

तकलीफ़ में बड़े को पुकारते हैं-

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِيَّاهُ
فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ﴿٦٧﴾

और जब तुमको समुद्र में तकलीफ़ पहुँचती है, तो 'उससे' सब ग़ायब हो जाते हैं, फिर जब 'वह' तुम को बचाकर खुश्की (शुष्क-भूमि) में पहुँचा देता है तो तुम 'उससे' मुहँ मोड़ जाते हो, इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है। (सूरः बनी इस्राईल-६७)

अल्लाह तआला फ़रमाता है,

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ
السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

कह दीजिए, ''क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आ पड़े, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? अगर सच्चे हो (तो बताओ)।" (सूरः अन्आ़म-४०)

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ
وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

(नहीं) बल्कि तुम 'उसी' को पुकारते हो, तो जिस के लिए तुम 'उसे' पुकारते हो, 'वह' अगर चाहता तो उसको दूर कर देता, और जिनको तुम शरीक बनाते हो, उन्हें भूल जाते हो।''

(सूरः अन्आ़म-४१)

तकलीफ़ में उसी को पुकारते हैं-

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

۞ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ
ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ
مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ
قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾

और इन्सान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो वह अपने 'रब' की ओर रूजूअ़ हो कर 'उसे' पुकारने लगता है, फिर जब 'वह' उसे अपनी नेअ़मत (अनुकम्पा) अता करता है, तो 'वह' उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और अल्लाह के बराबर (समकक्ष) ठहराने लगता है, ताकि (लोगों को) 'उसकी' राह से भटका दे, कह दीजिए, ''अपने इन्कार का थोड़ा मज़ा ले लो! फिर तो तुम आग वालों में से होगे।''

(सूरः ज़ुमर-८)

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُقْتَصِدٌ ۚ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ﴿٣٢﴾

और जब मौजें (लहरें) उन पर बादलों की तरह ढाँप लेती हैं, तो वे अल्लाह ही को पुकारते हैं, दीन को 'उसके' लिए ख़ालिस करते हुए, फिर जब 'वह' उन्हें बचा कर थल की ओर ले आता है, तो उनमें से कुछ ही सही राह पर क़ायम रहते हैं, और 'हमारी' निशानियों का इन्कार तो बस वही लोग करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले नाशुक्रे हैं। (सूरः लुक़मान-३२)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا
مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا ﴿١٠١﴾

और जब तुम धरती पर सफ़र करो, तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, कि नमाज़ को कम करके पढ़ो; अगर तुम्हें डर हो कि काफ़िर लोग तुम्हें सताएँगे, बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले हुए दुश्मन हैं।

(सूरः निसा-१०१)

शिर्क की क़िस्में

१- शिर्क अकबर
२- शिर्क अस्ग़र

शिर्क अकबर की तीन क़िस्में-

१- अल्लाह की तरह इ़ल्म में किसी भी मख़लूक़ को साझीदार बनाना।
२- तसर्रुफ़ (इख़्तियार) में किसी को साझीदार समझना इ़बादत में किसी को साझीदार बनाना।
३. अ़िबादत में किसी को साझीदार बनाना।

अल्लाह के बराबर इ़ल्म में शिर्क

किसी बुज़ुर्ग या पीर को यह समझना कि हमारे हर ह़ाल की उसको हर वक़्त ख़बर है, नुजूमी पंडित से ग़ैब की ख़बरें मालूम करना, या किसी बुज़ुर्ग के कलाम से फ़ाल देखकर उस पर यक़ीन कर लेना या किसी को दूर से पुकारना, या यह समझना की उसको ख़बर हो गई, किसी को हर जगह ह़ाज़िर व नाज़िर समझना, या हर चीज़ की ख़बर हर वक़्त बराबर अल्लाह के सिवा किसी और को समझना दूर की हो या क़रीब की छुपी हो या खुली अंधेरे में हो, या उजाले में, आसमानों में हो या ज़मीनों में, पहाड़ो की चोटी पर हो या समुन्दर की तह तक इन सबका इ़ल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

किसी का नाम लें उठते बैठते जैसे 'या वारिस' और दूर या क़रीब से मुसीबत में उस को पुकारे और दुश्मन पर उसका नाम लेकर हमला करे और उसके नाम का ख़त्म पढ़े या उसकी सूरत का ख़याल बांधे और यूँ समझे कि जब मैं उसका नाम लेता हूँ ज़बान से या दिल से या उसकी सूरत का या उसकी क़ब्र का ख़्याल बांधता हूँ तो वहीं उसको ख़बर हो जाती है और उससे मेरी कोई बात छिपी नहीं रह सकती और जो मुझ पर ह़ालात गुज़रते हैं, जैसे बीमारी व तन्दुरूस्ती के ग़म व ख़ुशी के सबकी उसको हर वक़्त ख़बर हो जाती है और जो बात मेरे मुँह से निकलती है, वह सब सुन लेता है, और जो ख़याल व वह़म मेरे दिल में गुज़रता है वह सबसे वाक़िफ़ है। इस तरह के अक़ीदों से आदमी मुश्रिक हो जाता है, चाहे यह अक़ीदा नबियों के साथ रखे या वलियों के साथ, या पीरों के साथ, या शहीदों के साथ या इमामों के साथ, भूत या परियों के साथ, इन सबसे आदमी मुश्रिक हो जाता है।

इ़ल्म ग़ैब

ग़ैब का मुकम्मल इ़ल्म केवल अल्लाह को है जैसे कि अल्लाह तआ़ला ख़ुद क़ुर्आन में फ़रमाता है।

۞ وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ
إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ
وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

और 'उसी' के पास ग़ैब (परोक्ष) की कुन्जियां हैं, जिन्हें 'उसके' सिवा कोई नहीं जानता; जल और थल में जो कुछ है, उसे 'वह' जानता है, और जो पत्ता भी गिरता है, उसे 'वह' ज़रूर जानता है; और ज़मीन के अन्धेरों में कोई दाना हो, और कोई हरी, या सूखी चीज़ हो, मगर वह सब रौशन किताब में मौजूद है। **(सूरः अनआ़म-६)**

जिस तरह अल्लाह ने अपने बन्दों के ज़ाहिर की चीज़ों के मालूम करने के लिए कुछ चीज़ें बनाई हैं जैसे आँख देखने को, कान सुनने को, नाक सूंघने

को, ज़बान चखने को, हाथ टटोलने को, अ़क्ल समझने को वह चीज़ें इसके अख़्तियार में दी हैं कि अपनी ख़्वाहिश के अनुसार उनसे काम लेता है।

जैसा कि जब देखने को दिल चाहा तो आंखें खोल दीं, न चाहा तो बन्द कर दीं, जिस चीज़ का मज़ा मालूम करने का इरादा किया मुँह में डाल लिया, और इरादा न हुआ तो न डाला, इस तरह इन चीज़ों के मालूम करने की कुन्जियाँ इनको दी हैं जैसे जिसके हाथ कुंजी होती है ताला उसके अख़्तियार में होता है जब चाहे खोले जब चाहे न खोले।

इसी तरह अल्लाह ने ग़ैब की कुन्जियाँ अपने हाथ में रखीं हैं, किसी वली या नबी को इमाम या इमाम ज़ादे को, भूत या परी को, अल्लाह ने यह ताक़तें नहीं दी कि जब वह चाहें ग़ैब की बात मालूम कर लें बल्कि अल्लाह तआ़ला अपने इरादे से कभी किसी को जितनी बताना चाहता है ख़बर कर देता है।

तमाम इ़ल्म केवल अल्लाह तआ़ला को है-

जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۖ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ٣٤

बेशक उस (क़ियामत की) घड़ी का इ़ल्म अल्लाह ही के पास है, 'वही' बारिश बरसाता है और जानता है जो कुछ (माओं के) रह़म (गर्भ) में है, कोई व्यक्ति नहीं जानता कि वह कल क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला, ख़बर रखने वाला है। **(सूरः लुक़मान-३४)**

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

قُل لَّا يَعْلَمُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ٦٥

कह दीजिए, ''आसमानों और ज़मीन में कोई भी ऐसा नहीं, जो ग़ैब (परोक्ष) का इल्म रखता हो, सिवाय अल्लाह के और

वे नहीं जानते कि कब उठाए जाएँगे।''

(सूरः नम्लि-६५)

वह गुमराह है जो अल्लाह के अ़लावा किसी को पुकारता है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَن لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ غَافِلُونَ ٥

और उस व्यक्ति से बढ़कर गुमराह कौन हो सकता है! जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारता हो, जो क़ियामत तक उनको जवाब नहीं दे सकते, और वे उनकी पुकार से बेख़बर हों।

(सूरः अह़्क़ाफ़-५)

तसर्रुफ़ (अख़्तियार) में शिर्क

तसर्रुफ़ में शिर्क का मतलब है कि किसी को नफ़ा नुक़्सान का मालिक समझना या किसी से मुरादें मांगना, रोज़ी या औलाद मांगना, किसी को अपने इरादे से तसर्रुफ़ करना और अपना हुक्म जारी करना, और अपने इरादे से मारना या जिलाना, रोज़ी देना या तंग करना, तन्दुरुस्त या बीमार कर देना, मुरादें पूरी करना, बलाएं टालना, मुश्किल में किसी को पुकारना, यह सब अल्लाह के काम हैं और किसी नबी, वली, पीर, शहीद, भूत या परी की यह शान नहीं कि कोई इनसे मुरादे मांगे।

जो कोई किसी और के लिए ऐसा तसर्रुफ़ साबित करे और उससे मुरादे मांगे और इस उम्मीद पर नज़र व नियाज़, करे और उसकी मन्नतें माने, और मुसीबत के वक़्त उसे पुकारे, तो वह मुश्रिक हो जाता है।

नज़र व नियाज़-

जैसा अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:-

قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

कह दीजिए, ''वह कौन है? जिस के हाथ में हर चीज़ का अधिकार है, और वह पनाह देता है, और कोई उसके मुक़ाबले में पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो?'' **(सूरः मूमिनून-८८)**

سَيَقُولُونَ لِلَّهِ ۚ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

वह ज़रूर यही कहेंगे "यह सब अल्लाह ही का है,'' कह दीजिए, ''फिर तुम पर कहाँ से जादू चल जाता है?''

(सूरः मुमिनून-८९)

अल्लाह ही के अधिकार में है–

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ شَيْـًٔا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٧٣﴾

और अल्लाह के सिवा ऐसों को पूजते हैं; जिन्हें आसमानों और ज़मीन से रोज़ी देने का कुछ भी अधिकार नहीं और न कुदरत ही रखते हैं।

(सूरः नहल-७३)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ۖ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ﴿١٠٦﴾

और अल्लाह के सिवा किसी और को न पुकारना जो न तुम्हें फायदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान, अगर तुम ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में से हो जाओगे।

(सूरः यूनुस-१०६)

ज़र्रह बराबर जो मालिक न हो–

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

قُلِ ٱدْعُوا۟ ٱلَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِى ٱلْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُۥ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

कह दीजिए, "अल्लाह को छोड़ कर जिनका तुम्हें दावा है, उनको पुकार कर देखो वह न आसमानों में ज़र्रा बराबर चीज़ के मालिक हैं, और न ज़मीन में, और न उन दोनों में उन का कोई साझा है, और न उनमें से कोई उसका मदद्गार है।" **(सूरः सबा-२२)**

وَلَا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُۥ ۚ حَتَّىٰٓ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ قَالُوا۟ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا۟ ٱلْحَقَّ ۖ وَهُوَ ٱلْعَلِىُّ ٱلْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾

और "उसके" यहाँ कोई सिफ़ारिश काम न आएगी, लेकिन उसी की जिसको 'उसने' इजाज़त दी होगी, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी, तो (फ़रिश्ते) कहेंगे, ''तुम्हारे रब ने क्या कहा?'' वे कहेंगे, ''बिल्कुल हक़ (कहा), और 'वह' महान और ऊँचा है।'' **(सूरः सबा-२३)**

मक्का के मुशिरक–

मक्का के मुशिरक भी अल्लाह को मानते थे और उसके 'वुजूद' के क़ायल थे, क़अ़बः की हिफ़ाज़त करते थे, ख़ुद को इब्राहीमी दीन के मानने वाले समझते थे मगर अल्लाह के तसर्रुफ़ में अपने सरदारों को और देवी देवताओं को भी शामिल करते थे। उनके ख़याल में रिज़्क़ किसी एक देवता के ज़िम्मे था, तो बारिश किसी और के बस में थी, बीमारी व सेहत किसी दूसरे देवता के अख़्तियार में थी, तो औलाद किसी और के अख़्तियार में थी जैसा कि हमारे यहाँ ब्रहमा को पैदा करने वाला, विष्णु को रोज़ी देने वाला, महेश को मौत देने वाला समझा जाता है। इसी को मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि इन सब बातों का अख़्तियार केवल अल्लाह ही को है।

इबादात में शिर्क

इबादत की परिभाषा-

'इबादत' किसी की ज़्यादा से ज़्यादा तअ़ज़ीम (सम्मान) और दिल व जान से बेहद आजज़ी व इन्किसारी के साथ अपने इरादे से अख़्तियार करने का नाम है और दीन की इस्तिलाह में 'अपने-अपने समय के अनुसार शरीअ़त को लाने वाले नबियों की फ़रमाँबरदारी करने का नाम है'। अगर कोई काम शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ किया जाए वह चाहे इबादत के रूप में ही क्यों न हो इबादत नही समझी जाएगी बल्कि गुनाह होगा।

इबादत की ह़क़ीक़त

नमाज़ इबादतों में सबसे बड़ी इबादत है लेकिन मकरूह वक़्त में, या हड़पी हुई ज़मीन पर उसका पढ़ना गुनाह है। इसी तरह रोज़ः भी एक अहम इबादत है लेकिन ईद या तशरीक के दिनों में रोज़ः रखना गुनाह है, इसलिए कि यह शरीअ़त के हुक्म के ख़िलाफ़ है। इस तरह नमाज़ इबादत की ह़क़ीक़त फ़रमाँबरदारी के रूप में है न कि अपनी मर्ज़ी से नमाज़, रोज़ः आदि।

इबादत में अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न मानने का मतलब होता है कि किसी से मुहब्बत अल्लाह के समान न हो, न किसी का डर उसके समान हो, न किसी से उम्मीद उसके समान हो, न किसी पर ऐसा भरोसा जैसा अल्लाह पर होना चाहिए, न किसी काम को इतना ज़रुरी समझे जितना अल्लाह की इबादत को, और न अल्लाह के समान किसी की नज़र और मन्नत माने, न अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाए और न अल्लाह के समान किसी दूसरे को सम्मान दे।

अल्लाह के अ़लावह किसी और के साथ इबादत जैसा मामला करना

अल्लाह के सिवा किसी और को सज्दः करना, रुकूअ़ करना, हाथ बांध कर खड़े होना, किसी के नाम का जानवर दौड़ाना या चढ़ावा चढ़ाना, किसी के नाम की मन्नत मानना, किसी की क़ब्र या घर का तवाफ़ करना, अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में किसी दूसरे की बात या रस्म को ज़्यादा बेहतर समझना किसी के सामने झुकना।

किसी के नाम पर जानवर ज़िब्ह करना, किसी जगह को कअ़बे का सा अदब व तअ़ज़ीम करना, या जो चीज़ें अल्लाह ने अपने लिए ख़ास की हैं उनमें किसी को साझीदार ठहराना। किसी के नाम का रोज़ः रखना और उसके घर की ओर दूर-दूर से सफ़र करके जाना और ऐसी सूरत बना कर चलना कि हर आदमी जान ले कि यह लोग उस घर की ज़ियारत के लिए जा रहे हैं, रास्ते में उस का नाम पुकारना और वहाँ जा कर तवाफ़ करना, या सज्दः करना, या जानवर ले जाना और वहाँ मन्नतें मानना, उसकी चौखट के आगे खड़े होकर दुआ़ माँगना, दीन व दुनिया की मुरादें माँगना, पत्थर को बोसा देना उसकी दीवार से अपना मुँह और छाती मलना, उसका ग़िलाफ़ पकड़ कर दुआ़ माँगना, उसका मुजावर बनकर उसकी ख़िदमत करना, उसके कुएँ के पानी को बरकत वाला समझ कर पीना, बदन पर डालना, आपस में बाँटना, ग़ैर हाज़िर लोगों के लिए ले जाना, रुख़सत होते वक़्त उल्टे पैर चलना, वहाँ के जंगल का अदब करना-अर्थात पेड़ न काटना, घास न उखाड़ना- यह सब काम अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए बताए हैं।

अब अगर कोई व्यक्ति इन बातों को पीर व पैग़म्बर के साथ, या किसी देवी-देवता के साथ, या किसी की सच्ची या झूठी क़ब्र के साथ, या किसी के थान पर, या किसी के घर को, या किसी के तबर्रुक़ को, या निशान को, या ताज़िया को सज्दः या रुकूअ़ करे, या उसके नाम का रोज़ः रखे, या हाथ बांध कर खड़ा

हो या जानवर चढ़ाए, या ऐसे घरों में दूर-दूर से ज़ियारत की नियत सेजाए और उसके साथ वही काम करे जो ऊपर बताया जा चुका है यह सब बातें शिर्क हैं।

बुर्ज़ुग को पुकारना-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

اتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا
مِّن دُونِ ٱللَّهِ وَٱلْمَسِيحَ ٱبْنَ مَرْيَمَ
وَمَآ أُمِرُوٓا۟ إِلَّا لِيَعْبُدُوٓا۟ إِلَٰهًا وَٰحِدًا ۖ
لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَٰنَهُۥ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ٣١

उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने धर्मज्ञाताओं (उलमा) और सन्तों (बुजुर्गो) को रब बना लिया है, और मसीह इब्ने मरयम को भी-हालाँकि उन्हें इसके सिवा कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वह 'केवल एक मअ़बूद' (उपास्य) की इ़बादत करें 'जिसके' सिवा कोई उपास्य नहीं, पाक है 'वह' उस शिर्क से जो यह करते हैं। **(सूरः तौबः-३१)**

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के सिवा किसी और की इ़बादत नहीं की जाएगी और न किसी के सामने सज्दः किया जाएगा।

आदम और मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त

कुछ लोग कह देते हैं कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) को फ़रिश्तों ने सज्दः किया था और ह़ज़रत याक़ूब (अ़लै०) ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लै०) को किया था तो हम भी किसी बुजुर्ग को सज्दः कर लें तो क्या ह़र्ज है।

यह बात ग़लत है क्योंकि अब ह़ज़रत आदम (अ़लै०) की शरीअ़त नहीं है, इसलिए कि ह़ज़रत आदम (अ़लै०) के ज़माने में अपनी बहनों से निकाह़ करना जायज़ था, लेकिन अब ह़राम है अब तो केवल क़ियामत तक ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) की शरीअ़त पर अ़मल करने वाला ही निजात पाएगा, पिछली शरीअ़तें मन्सूख़ (ख़त्म) हो चुकी हैं। इसलिए अब ह़ज़रत इब्राहीम, याक़ूब या यूसुफ़ (अ़लै०) की शरीअ़तों पर अ़मल करने वाला निजात नहीं पाएगा।

अल्लाह की सिफ़ात (गुणों) में शिर्क

अल्लाह की जो सिफ़तें (गुणवाचक नाम) या जो सिफ़ाती नाम हैं वह सब अल्लाह के लिए ही ख़ास हैं, जैसे-

ख़ालिक़, राज़िक़, अ़लीम आदि। इन में से किसी को साझीदार ठहराना शिर्क है, लेकिन इसके साथ यह भी शर्त है कि जिस अर्थ में वह अल्लाह के लिए इस्तिमाल होता हो उस का फ़ायदा यह है कि जब हम इन शब्दों को अल्लाह के लिए बोलते हैं तो इसका मतलब ख़ास होता है, लेकिन अगर इन्सान के लिए भी उस सिफ़त को उसी मतलब में बोल दें जो अल्लाह के लिए बोलते हैं तो यह अल्लाह की सिफ़त में साझीदार ठहराना हो जाएगा।

अल्लाह के हुक़ूक़ में शिर्क

हुक़ूक़ में साझीदार बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह की तमाम सिफ़तों से जो बातें निकलती हैं या जो हुक़ूक़ हम पर आते हैं उन में किसी को साझीदार ठहराना। जैसे- अल्लाह ख़ालिक़ है तो इस से पता चलता है कि तमाम दुनिया में हुक्म व इन्तिज़ाम उसी का हो। अब अगर हम यह मानें कि आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है, लेकिन साथ ही यह भी मान लें कि उन का इन्तिज़ाम अल्लाह के सिवा किसी और के हाथ में है, तो यह अल्लाह के साथ साझी ठहराना हो जाएगा।

इस तरह जब ख़ालिक़(सृष्टा) वही है तो बन्दगी और फ़रमाँबरदारी उसी की हो, अगर किसी और की बन्दगी अपना लें, या उस की फ़रमाँबरदारी के ख़िलाफ़ किसी और की फ़रमाँबरदारी को क़ुबूल कर लें, जिस तरह उस की होनी चाहिए तो यह सब बातें हुक़ूक़ में शरीक ठहराना हो जाएगा।

इस तरह की बहुत सी बातें और सूरतें, शिर्क या ज़रिया शिर्क हैं। जो असली शिर्क का दरवाज़ा खोल देती हैं, जिसे हम क़ुर्आन की दी गई इन आयतों

से अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

शिर्क नाक़ाबिले माफ़ी जुर्म-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

अल्लाह उसको माफ़ नहीं करेगा कि किसी को 'उसका' साझी ठहराया जाए, लेकिन उससे नीचे के दर्जे के गुनाहों को जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा, और जिसने अल्लाह का साझीदार बनाया, तो उसने एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ लिया।

(सूरः निसा-४८)

दूसरी जगह फ़रमाया-

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٥٨﴾

कह दीजिए, ''यह अल्लाह की मेहरबानी तो 'उसकी' रह़मत से नाज़िल हुआ है, और लोगों को चाहिए कि इसको पाकर खुश हों, इस (दुनिया) से कहीं बेहतर है जिस को यह जमा करने में लगे हैं।'' **(सूरः यूनुस-५८)**

आदतों में शिर्क

आदतों में भी कभी-कभी दबे पाँव शिर्क आ जाता है। जैसे- नेक और बुरे वक़्त का मानना, नुजूमी के कहने पर यक़ीन करना, किसी के नाम पर कान-नाक छेदना, बाली पहनाना, किसी के नाम का पैसा बाज़ू पर बाँधना या गले में नाड़ा डालना, चोटी रखना, बद्धी बाँधना, फ़क़ीर बनाना, अ़ली बख़्श, हुसैन बख़्श, अताउन्नबी आदि नाम रखना, किसी चीज़ को अछूती समझना, किसी जानवर पर किसी का नाम लगा कर उसका अदब करना, शुगून लेना, किसी महीने को मन्हूस

समझना या यूँ कहना कि अल्लाह व रसूल चाहेगा तो फ़लाँ काम हो जाएगा, किसी के नाम की क़सम खाना, किसी को शहनशाह कहना, ख़ास तौर से किसी बुज़ुर्ग की फ़ोटो रखना और उसकी तअ़ज़ीम करना, कुफ़्र को पसंद करना, कुफ़्र की बातों को अच्छा जानना।

ऊपर की तमाम बातों का नतीजा यह है कि शिर्क से बचा जाए जिसमें एक वह शिर्क, जिसका सम्बन्ध अल्लाह तआ़ला की ज़ात से हो, दूसरा वह जिसका सम्बन्ध उसकी सिफ़ात से हो दोनों शिर्क हैं।

शिर्के अकबर (बड़ा शिर्क)

बड़ा शिर्क बन्दे को दायरे मिल्लत से निकाल देता है और उस को हमेशा के लिए जहन्नम भेज देता है, यह उस सूरत में है जब कि वह शिर्क पर ही मरा हो, और तौबः की तौफ़ीक़ न मिली हो, शिर्क अकबर का मतलब है किसी इबादत को ग़ैरुल्लाह के लिए अदा की जाए, जैसे ग़ैरुल्लाह से दुआ़ करना, ग़ैरुल्लाह का तक़र्रुब ह़ासिल करने के लिए उस की बारगाह में क़ुर्बानी करना, नज़र व नियाज़ चढ़ाना, इसमें मज़ारात, जिन्न व शैतान सब आ जाते हैं, इसी तरह़ मुर्दा या जिन्नात व शयातीन से ख़ौफ़ खाना कि वह उसे तकलीफ़ न पहुँचा दे, उस को कहीं बीमारी में मुब्तिला न कर दे।

इसी तरह़ ग़ैरुल्लाह से ऐसी उम्मीदें वाबस्ता रखना जिस पर सिर्फ़ अल्लाह क़ुदरत रखता है, जैसे- ह़ाजत पूरी करना, मुसीबत दूर करना, इस तरह़ के शिर्क आज कल बुर्ज़ुगो की क़ब्रों पर ख़ूब हो रहे हैं, इस तरफ़ इशारा फ़रमाते हुए अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः-

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ

और यह अल्लाह के सिवा (ऐसी चीज़ों की) इ़बादत करते हैं जो उनको न कुछ नुक़सान पहुँचा सकें और न उनका कुछ भला कर सकें और वे कहते हैं ''यह अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।'' **(सूरः यूनुस-१८)**

शिर्क अस्ग़र (छोटा शिर्क)

शिर्क अस्ग़र से बन्दा इस्लाम से ख़ारिज तो नहीं होता, लेकिन उस की तौहीद में कमी आ जाती है, यह शिर्क अकबर का एक ज़रिया बनता है। जिस की दो क़िस्में हैं।

१. शिर्क जली (ज़ाहिरी शिर्क)

यह शिर्किया अल्फ़ाज़ व काम होते हैं, शिर्किया अल्फ़ाज़ में ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना आता है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) का इर्शाद हैः

"जिसने ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई उस ने कुफ़्र किया या शिर्क किया।" **(तिर्मिज़ी)**

"......आप (सल्ल०) का उस शख़्स से यह फ़रमाना जिस ने कहा था कि अगर अल्लाह तआ़ला और आप ने चाहा तो ऐसा होगा, तो क्या तुम ने मुझे अल्लाह तआ़ला के बराबर बना दिया, कहो अगर अल्लाह ने चाहा तो होगा।" **(नसई)**

इसी तरह़ यह कहना "अगर फ़लां न होता तो ऐसा होता" जब कि उस के क़ौल का सही़ तरीक़ा यह है जैसा अल्लाह तआ़ला ने चाहा, फिर फ़लां शख़्स ने किया, जिस से यह मफ़हूम ख़ुद ब ख़ुद पैदा हो जाता है कि बन्दे की चाहत अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के ताबे है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

और तुम (कुछ) नहीं चाह सकते जब तक कि वह अल्लाह रब्बुलआ़लमीन (सारे संसार का रब) न चाहे। **(सूरः तकवीर- २६)**

शिर्किया आ़माल जैसे- कड़ा पहनना, नफ़ा नुक़सान के लिए या मुसीबत से बचने के लिए धागा बाँधना, इन आ़माल के साथ जब यह अ़क़ीदा हो कि इन से मसायब व परेशानियाँ दूर होती हैं, बलाएँ टलती हैं, तो यह शिर्क अस्ग़र है,

इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ने इन चीज़ों को इन मक़ासिद के ज़राय नहीं बनाये हैं, लेकिन अगर किसी शख़्स का यह एतिक़ाद हो कि यह चीज़ें ख़ुद बला व मुसीबत दूर करती हैं तो यह शिर्क अकबर हो जाती हैं, इसलिए कि इस में ग़ैरुल्लाह के साथ उस तअ़ल्लुक़ का इज़हार हो रहा है जो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिए ख़ास है।

२. शिर्क ख़फ़ी (हल्का शिर्क)

यह इरादों और नियतों का शिर्क है, जिसे रियाकारी शोहरत, यानी अल्लाह तआ़ला से तक़र्रुब वाले अ़मल इसलिए किये जाएँ ताकि लोग उस की तअ़रीफ़ करें। जैसे- कोई शख़्स अच्छी नमाज़ सिर्फ़ इसलिए पढ़ता है, या सद्क़ा व ख़ैरात सिर्फ़ इसलिए करता है कि लोग सुनें तो उस की ख़ूब तअ़रीफ़ करें, किसी भी अ़मल में जब रियाकारी आ जाती है तो वह अ़मल बातिल हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا

"तो जो कोई अपने रब से मिलने की उम्मीद रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छे काम करता रहे, और अपने रब की इबादत में किसी को साझीदार न बनाए।"

(सूरः कहफ़- ११०)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) फ़रमाते है

"तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ सब से ज़्यादा डर मुझे शिर्क अस्ग़र से है, लोगों ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल शिर्क अस्ग़र से क्या मुराद है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया रियाकारी।"

(अह़मद, तबरानी, अल्बग़वी)

इसी तरह दुनियावी लालच में कोई दीनी अ़मल करना भी शिर्क ख़फ़ी (हल्का) है, जैसे कोई शख़्स सिर्फ़ माल व दौलत के लिए ह़ज करता हो, अज़ान देता हो, या लोगों की इमामत करता हो, उ़लूमे शरअ़िया ह़ासिल करता हो जिहाद

फ़ी सबीलिल्लाह करता हो, ऐसे लोगों के सिलसिले में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमायाः

> “हलाक हुआ दीनार का बन्दा, हलाक हुआ दिरहम का बन्दा, हलाक हुआ काली चादर का बन्दा, हलाक हुआ मख़्मली चादर का बन्दा, अगर उसे दिया जाता है तो ख़ुश होता है, और अगर नहीं दिया जाता है तो नाख़ुश रहता है।” **(बुख़ारी)**

“अ़ल्लामा इब्ने क़य्यिम (रह०) फ़रमाते हैं कि इरादों व नियतों का शिर्क तो यह है कि जिस का कोई किनारा नहीं, और बहुत कम ही लोग इस से बच पाते हैं, लिहाज़ा जिस शख़्स ने अपने अ़मल से अल्लाह की रज़ामन्दी के अ़लावह किसी दूसरी चीज़ का इरादा किया या अल्लाह से तक़र्रुब के अ़लावह किसी और चीज़ की ओर ग़ैरुल्लाह से उस अ़मल के जज़ा की दरख़्वास्त की तो वह नियत व इरादे का शिर्क है।”

इख़्लास

इख़्लास का मतलब यह है कि अपने तमाम आ़माल व अफ़आ़ल इरादा व नियत में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात को ख़ालिस किया जाए।

यही चीज़ हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत है, जिस को अख़्तियार करने का हुक्म अल्लाह तआ़ला ने अपने हर बन्दे को दिया है। इसलिए कि इस के अ़लावह कोई दूसरी चीज़ अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़बूल नहीं, यही इस्लाम की हक़ीक़त है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ

“और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा, और वह व्यक्ति आख़िरत में बड़ा घाटा उठाने वालों

में से होगा।” **(सूरः आले इमरान–८५)**

यही हक़ीक़त हज़रत इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत है। लिहाज़ा जो व्यक्ति भी एराज़ करेगा वह दुनिया का सब से बड़ा नादान होगा।

शिर्क अकबर और अस्ग़र में अन्तर

१- शिर्क अकबर से एक मुसलमान, मिल्लत से ख़ारिज हो जाता है और अस्ग़र से मिल्लत से ख़ारिज नहीं होता।
२- शिर्क अकबर मुश्रिक को हमेशा-हमेश के लिए जहन्नम रसीद कर देता है जब कि शिर्क अस्ग़र से ऐसा कुछ नहीं होता, अगर वह जहन्नम में गया भी तो ज़्यादा दिन तक नहीं रखा जाएगा।
३- शिर्क अकबर तमाम आ़माल को बर्बाद कर देता है मगर शिर्क अस्ग़र तमाम आ़माल को बर्बाद नहीं करता, लेकिन रियाकारी वाले काम तमाम आ़माल को ख़त्म कर देते हैं।
४- शिर्क अकबर मुश्रिक के माल व दौलत को मुबाह़ क़रार देता है जब कि शिर्क अस्ग़र में ऐसा नहीं होता।

शफ़ाअ़त ह़क़ है

हमें शफ़ाअ़त का इन्कार नहीं और न ही हम उससे बेज़ारी ज़ाहिर करते हैं बल्कि हमारा ईमान है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) शफ़ाअ़त करेंगे और आप की शफ़ाअ़त क़ुबूल होगी और हम आप (सल्ल०) की शफ़ाअ़त के उम्मीदवार हैं परन्तु याद रखिये।

शफ़ाअ़त केवल अल्लाह के अधिकार में है

शफ़ाअ़त की इजाज़त अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है–

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا

कह दीजिए, ‘‘सिफ़ारिश (शफ़ाअ़त) तो

सारी की सारी अल्लाह ही के अख़्तियार में है। **(सूरः ज़ुमर-४४)**

और यह शफ़ाअ़त अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बाद होगी, जैसा कि इर्शाद है-

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ

कौन है जो उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर किसी की शफ़ाअ़त कर सके। **(सूरः बक़रः-२५५)**

रसूलुल्लाह (सल्ल०) भी अल्लाह तआ़ला की इजाज़त के बिना किसी की शफ़ाअ़त नहीं करेंगे।

क़ुर्आन मजीद में इर्शाद है-

وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ

वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, 'मगर उस व्यक्ति की' जिससे अल्लाह खुश हो। **(सूरः अम्बिया-२८)**

याद रहे कि अल्लाह तआ़ला केवल तौहीद (एकेश्वरवाद) ही को पसन्द करता है। इर्शादे बारी तआ़ला है-

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ

और जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी और दीन को तलाश करेगा, तो वह उससे हरगिज़ क़ुबूल नहीं किया जाएगा। **(सूरः आले इमरान-८५)**

जब शफ़ाअ़त अल्लाह तआ़ला के अधिकार में है और उसकी इजाज़त ही से होगी, और रसूले अकरम (सल्ल०) और कोई भी दूसरा व्यक्ति इजाज़त मिले बिना शफ़ाअ़त नहीं कर सकता तो यह भी याद रखें कि अल्लाह तआ़ला शफ़ाअ़त की इजाज़त तौहीद के मानने वालों के लिए ही देगा।

इससे आप को मालूम हो गया होगा कि शफ़ाअ़त अल्लाह ही के अधिकार में है, और मेरी अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि ऐ अल्लाह! मुझे प्यारे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की शफ़ाअ़त नसीब फ़रमाइये।

अगर कोई यह कहे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) को शफ़ाअ़त दे दी गई है और मैं अल्लाह तआ़ला की दी हुई शफ़ाअ़त का ही आप (सल्ल०) से सवाल करता हूँ। तो उस का जवाब इस तरह है।

शफ़ाअ़त का आप (सल्ल०) से सवाल

इसका जवाब यह है कि ज़रूर अल्लाह तआ़ला ने रसूले अकरम (सल्ल०) को शफ़ाअ़त अ़ता फ़रमा दी है, परन्तु अल्लाह तआ़ला ने इसको सीधा आप (सल्ल०) से माँगने से मना फ़रमाया है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है-

فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا

अल्लाह के साथ किसी को मत पुकारो। **(सूरः जिन्न-१८)**

जब तुम अल्लाह को पुकारते हो और कहते हो कि ऐ अल्लाह! मेरे बारे में शफ़ाअ़त की इजाज़त रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दे तो अल्लाह तआ़ला के साथ किसी दूसरे को न पुकारने में भी उसका हुक्म मानो।

सवाल यह पैदा होता है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सिवा दूसरों को भी शफ़ाअ़त दी गई है जैसा कि सही अहादीस से साबित है कि फ़रिश्ते, छोटे बच्चे और औलिया-ए-किराम शफ़ाअ़त करेंगे तो क्या उनके बारे में भी कहेंगे कि अल्लाह तआ़ला ने उनको शफ़ाअ़त दे दी है, शफ़ाअ़त तो दी है मगर

इसका जवाब यह है कि अगर यह कहते हो कि यही सालिहीन की अ़िबादत है जिसका अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में ज़िक्र फ़रमाया है, अगर तुम इसका इन्कार करोगे तो तुम्हारी बात आप से आप बातिल हो जाएगी कि अल्लाह तआ़ला ने इनको शफ़ाअ़त का हक़ दिया है और मैं उनसे अल्लाह तआ़ला के दिये हुए से माँगता हूँ।

अगर कोई यह सवाल करे कि मैं अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, अल्लाह तआ़ला इससे मुझे पनाह में रखे। लेकिन बुज़ुर्गों और औलिया को पुकारता है, तो क्या उनसे फ़रियाद करना शिर्क नहीं है।

शिर्क से कैसे बचे

अल्लाह तआ़ला ने शिर्क को ज़िना से भी ज़्यादा बड़ा गुनाह क़रार दिया है और मानते हो कि अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन शिर्क को हरग़िज़ माफ़ नहीं करेगा।

फिर उसके बारे में न हमें कोई इ़ल्म है और न ही इसके बारे में इ़ल्म वालों से पूछते हैं।

अगर कोई यह समझता है कि शिर्क यह है कि बुतों को पूजा जाए और हम बुतों की पूजा नहीं करते तो।

बुतों को पूजने की मुराद

क्या आप यह समझते हैं कि मुश्रिकीने अ़रब का यह अ़क़ीदा था कि यह लकड़ियाँ या पत्थर कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं या अपने पुकारने वालों के काम का इन्तिज़ाम करते हैं। हरग़िज़ नहीं, क़ुर्आन करीम उसकी काट करता है।

इसी तरह़ अगर कोई यह कहता है कि पूजने से मुराद यह है कि कोई आदमी लकड़ी या किसी क़ब्र पर बनी हुई इमारत कोई ह़ाजत तलब करे, पुकारे और उनके नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करे और कहे कि यह मुझे अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर देते हैं या उनकी बरकत से अल्लाह तआ़ला तकलीफ़ दूर कर देता है या उसकी बरकत से हमें रोज़ी मिलती है।

तो यह सब भी शिर्क है। शिर्क केवल बुतों की पूजा का नाम नहीं है बल्कि किसी को पुकारना और उन पर भरोसा करना भी शिर्क है?

इन बातों के शिर्क होने की बात अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब में की है और हर उस व्यक्ति को काफ़िर क़रार दिया है जो मलाइका (फ़रिश्तों, ह़ज़रत ईसा (अ़लै०) या सालिह़ीन और औलिया में से किसी के साथ इस क़िस्म का सम्बन्ध रखता हो।

अगर कोई कहता है कि मैं अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करता तो शिर्क तो बुतों की अ़िबादत है तो पूछिये कि बुतों की अ़िबादत से क्या

मुराद है? वज़ाह़त (स्पष्टीकरण) कीजिए।

अगर वही कुछ बयान करे जो क़ुर्आन मजीद में है तो बेहतर अगर उसको इसका इ़ल्म ही नहीं तो जिस चीज़ का उसको इ़ल्म नहीं उसके बारे में उसके किसी भी दावे की कोई वास्तविकता नहीं।

अगर कोई इसका मतलब ऐसा बयान करे जो क़ुर्आनी आयात के ख़िलाफ़ हो, तो उसके सामने शिर्क और बुतों की पूजा के सम्बन्ध में खुले तौर पर आयात को पढ़कर समझाया जाए कि यही सब कुछ आज-कल इस्लाम के दावेदार भी करते हैं।

अल्लाह तआ़ला का फ़रमाता है-

أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ

क्या उसने इतने मअ़बूदों (उपास्यों) को हटा कर एक ही मअ़बूद बना दिया? यह तो बड़े अचम्भे की चीज़ है!"

(सूरः साद-५)

ग़ैर अख़्तियारी फ़रियाद करना

अल्लाह तआ़ला पाक है, जो बात मख़्लूक़ (दृष्टि) के अख़्तियार में है उसका उससे फ़रियाद करने का हम इन्कार नहीं करते। जैसा कि क़ुर्आन मजीद में है।

जंग के मौक़े पर जब इन्सान अपने साथियों से ऐसी मदद तलब करता है जिस पर वह क़ुदरत रखते हैं तो वह सही है, मगर हम उस फ़रियादी के मुन्किर हैं जो औलिया किराम की क़ब्रों पर जाकर अ़िबादत के तौर पर किया जाता है या उनको ग़ायबाना ऐसे कामों के लिए पुकारा जाता है जो काम केवल अल्लाह तआ़ला के अख़्तियार में है और किसी मख़्लूक़ को उन पर क़ुदरत नहीं।

यह बात साबित हो जाने के बाद समझ लेना चाहिए कि क़ियामत के दिन अम्बिया-ए-किराम (अ़लै०) से जो फ़रियाद होगी वह यह है कि अल्लाह तआ़ला से वह दुआ़ करें कि लोगों का ह़िसाब जल्दी हो जाए ताकि जन्नत वाले मैदाने ह़श्र की सख़्ती से निजात पाएँ इस तरह़ की फ़रियाद दुनिया और आख़िरत दोनों जगह जायज़ है।

ज़िन्दा लोगों से दुआ़ करना जायज़–

आप किसी ज़िन्दा नेक आदमी के पास जाएँ वह आप के पास बैठे और आपकी बात भी सुने आप उससे अपने लिए दुआ़ की दरख़्वास्त करे तो यह जायज़ है।

सहा़बा-ए-किराम (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़िन्दगी में आप (सल्ल०) की ख़िदमत में हा़ज़िर होते और अपने लिए दुआ़ की आप (सल्ल०) से दरख़्वास्त किया करते थे, परन्तु रसूलुल्लाह (सल्ल०) की वफ़ात के बाद आप (सल्ल०) के रौज़ा (क़ब्र) पर जाकर किसी सहा़बी ने आप से दुआ़ की दरख़्वस्त नहीं की, बल्कि कुछ उ़लमा ने क़ब्र के पास खड़े होकर आप (सल्ल०) से दुआ़ कराना तो दरकिनार उस जगह अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करने से भी मना फ़रमा दिया है, ताकि कोई यह न समझे कि यह क़ब्र वाले से दुआ़ माँग रहे हैं।

तौही़द (एकेश्वरवाद) का सम्बन्ध

यह कि तौही़द का सम्बन्ध तीन बातों से है दिल से ईमान, जब़ान से इक़रार और बाक़ी अअ़ज़ा (शरीर) के साथ उसके मुताबिक़ अ़मल अगर इन तीन बातों में से किसी एक में भी ख़राबी हो तो ऐसा व्यक्ति मुसलमान नहीं रहता। अगर कोई व्यक्ति तौही़द को जानता है, परन्तु उसके अनुसार उसका अ़मल नहीं है तो वह ज़िद्दी और मुश्रिक है।

तौही़द के क़ुबूल न करने के उ़ज़्र

मक्का के काफ़िर भी ह़क़ को पहचानते थे, मगर कई क़िस्म के बहानों के ज़रिये ही उन्होंने ह़क़ को छोड़ दिया था।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है–

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑨

यह आयतों के बदले मामूली क़ीमत हा़सिल करते और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, बेशक बहुत बुरा है जो कुछ यह कर रहे हैं। **(सूरः तौबः-९)**

दूसरी जगह इर्शाद है–

يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَاۗءَھُمْ ۭ وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَھُمْ يَعْلَمُوْنَ

वे आपको (ऐ मुह़म्मद) पहचानते हैं, जिस तरह अपनी औलादों को पहचानते हैं; इस बात को भी पहचानते हैं, (कि मुह़म्मद (सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं) और उनमें से एक गिरोह जानते बूझते ह़क़ को छिपाता है। **(सूरः बक़रः-१४६)**

जो व्यक्ति बज़ाहिर तौही़द के माना व मतलब से अन्जान है या दिल से उस पर ईमान नहीं रखता तो वह मुनाफ़िक़ है, जो काफ़िर से भी बद्तर है।

अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है–

اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَھُمْ نَصِيْرًا ⑭

बेशक मुनाफ़िक़ आग (जहन्नम) के सबसे निचले दर्जे में होंगे और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। **(सूरः निसा-१४५)**

यह उदाहरण लम्बा है लोगों की बातों पर ग़ौर करने से ख़ूब अच्छी तरह़ मालूम हो सकता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ह़क़ को जानते पहचानते होते हैं परन्तु वह भी दुनिया के नुक़सान के डर से या पद की हि़फ़ाज़त के लिए या लोगों की ओर से आदर की कमी की वजह से उस पर अ़मल नहीं करते और कुछ लोग ऐसे हैं जो ज़ाहिरी तौही़द पर अ़मल तो करते हैं मगर दिल से नहीं, क्योंकि वह दिल में तौही़द का इ़ल्म नहीं रखते।

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّھُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝

बहाने न बनाओ, तुमने अपने ईमान लाने के बाद इन्कार किया, अगर हम तुम्हारे एक गिरोह को माफ़ भी कर दें तो भी एक गिरोह को तो सज़ा देकर ही रहेंगे, इस लिए कि वे मुजरिम हैं।'' **(सूरः तौबः ६६)**

जब यह साबित हो गई कुछ सहा़बा (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के

साथ रूमियों से जंग की थी के वह केवल एक कलिमे की वजह से काफ़िर हो गये जो उन्होंने (उनके हंसी में ही कहा था) यहाँ यह बात भी साफ़ हो जाती है कि जो व्यक्ति किसी की चापलूसी के ख़ातिर या अपने सत्ता के ख़ातिर या माल में नुक़सान हो जाने के डर से कुफ़्रिया कलिमः कह दे या उस पर अ़मल करे या हंसी मज़ाक़ में कुफ़्रिया कलिमः कह दे तो यह बहुत बड़ा गुनाह है।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ

जिस व्यक्ति ने अल्लाह पर ईमान लाने के बाद 'उससे' कुफ़्र किया- सिवाय उसके, जो इसके लिए मजबूर कर दिया गया हो- और उसका दिल ईमान पर संतुष्ट हो।

(सूरः नह़ल-१०६)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने केवल उस व्यक्ति का उज़्र तस्लीम किया है जो कुफ़्रिया कलिमः कहने पर ज़बरदस्ती मजबूर कर दिया गया हो, मगर इस शर्त के साथ कि उसका दिल सन्तुष्ट हो उसके सिवा किसी का उ़ज़्र कुबूल नहीं किया गया अब जो कोई डर की वजह से या चापलूसी के लिए या अपने देश के लिए या बाल व बच्चों के लिए या बिरादरी के लिए या माल की मुह़ब्बत में आकर या हंसी मज़ाक़ में या किसी और वजह से कलिमः कुफ़्र कह दे तो वह काफ़िर हो जाता है। अल्लाह तआ़ला ने ज़बरदस्ती और जब्र किये गये व्यक्ति को ही केवल छूट दी है।

यह मतलब दो आयतों से ह़ासिल होता है।

اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ जो मजबूर किया जाए कुफ़्र पर।

(सूरः नह़ल, १०६)

इस शब्द के समूह में केवल मजबूर व्यक्ति की फ़रियाद है और ज़ाहिर मजबूरी का सम्बन्ध केवल ज़बान और अ़मल से है। रहा दिल तो उस पर किसी का जोर नहीं हो सकता (इसलिए दिल में कलिमः कुफ़्र से नफ़रत और कलिमः तौह़ीद पर ईमान व इत्मिनान वाजिब है।)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है-

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ

यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसंद कर लिया। **(सूरः नह़ल १०७)**

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने व्याख्या फ़रमा दी है कि उनका कुफ़्र या उन पर अ़ज़ाब की वजह यक़ीन की ख़राबी, या जिहालत या दीन की दुश्मनी या कुफ़्र से मुह़ब्बत की बिना पर नहीं थी, बल्कि उसकी बड़ी वजह दुनियावी मज़ों में पड़ना था। यही वजह है कि उन्होंने दीन पर दुनिया को तरजीह (प्रधानता) दी।

मुसलमानों की मौजूदा ह़ालत और शिर्क

हमें अपना जायज़ा लेना चाहिए कि जिस दीन के हम मानने वाले हैं वह ख़ालिस तौह़ीद की बुनियाद पर बना था और जिस के क़याम की वाह़िद ग़र्ज़ यही थी कि दुनिया से शिर्क को मिटाकर तौह़ीद क़ायम करे।

यह बात कि जगह के बदल जाने से ह़क़ीक़त नहीं बदल जाती जो चीज़ मुश्रिकीन के अन्दर शिर्क है, अहले किताब के अन्दर शिर्क है, मुनाफ़िक़ीन के अन्दर शिर्क है वही चीज़ अगर मुसलमानों के अन्दर पाई जाएगी तो वह तौह़ीद नहीं बन जाएगी, वह भी शिर्क ही रहेगी।

नजासत किसी ठीकरे में हो या सोने चाँदी के किसी ख़ुशनुमा बर्तन के अन्दर, दोनों जगह नजासत है। इस तब्दीली से उस की ह़क़ीक़त में कोई तब्दीली नहीं होगी।

ह़ालात की तब्दीली-

अलूबत्ता ह़ालात की तब्दीली से उस का हुक्म ज़रूर बदल जाएगा। ख़िन्ज़ीर व शराब नजिस हैं, जो हर ह़ाल में नजिस हैं लेकिन एक मजबूर अगर जान बचाने के लिए बक़द्र जान बचाने के उन में से कुछ खा लेता है तो शरीअ़त इस पर गिरफ़्त नहीं करती बस एक चीज़ है वाक़िआ़ और एक चीज़ है ह़ालात की तब्दीली के एतिबार से उस का हुक्म बदल जाता है। यहाँ हम सूरत वाक़िआ़ का

जायज़ा लेंगे।

मुसलमानों की मौजूदा हालात का अगर जाएज़ा लिया जाए और बेजा ग़ुरूर एतिराफ़ हक़ से मानेअ़ न हो तो यह तस्लीम करना पड़ेगा कि अ़रब जाहिलियत से लेकर मुनाफ़िक़ीन तक शिर्क की जितनी क़िस्में बयान हुई हैं अगर वह सब नहीं तो उन का बड़ा हिस्सा मुसलमानों के अन्दर मौजूद है। सिर्फ़ शक्लें बदली हुई हैं।

अ़रब जाहिलियत की जिन्नात परस्ती, कवाकिब परस्ती, आबा परस्ती, खुद परस्ती, अहले किताब की उ़लमा परस्ती, जुबत परस्ती, तागूत परस्ती, क़ौम परस्ती, और हिमायत-ए-शिर्क, मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती, अना परस्ती और मफ़ाद परस्ती, उन तमाम "परस्तों" में से कौन सी परस्ती है जो आज मुसलमानों के अन्दर मौजूद नहीं है?

उलूमे सिफ़लिया-

कितने मुसलमान हैं जो उ़लूम सिफ़लिया की लअ़नतों में गिरफ़्तार हैं उन्होंने टोने टोटके, गन्डे, तअ़वीज़[1], सह़र और तिलस्मात वग़ैरह को कस्ब मआ़श का ज़रिया बना रखा है। तस्ख़ीर जिन्नात व शयातीन अ़मलियात का इ़ल्म ही उन के नज़दीक अस्ली इ़ल्म है।

जिन्नात की तस्ख़ीर-

जिन्नात की तस्ख़ीर के लिए वह तरह़-तरह़ की रियाज़तें करते हैं, चिल्ला कशी करते हैं, नज़रें और चढ़ावे पेश करते हैं, उन को इ़ल्म ग़ैब का वसीला

१- अह़ादीसे नबवी से जिन तअ़वीज़ों के लिए ज़्यादा से ज़्यादा रुख़्सत निकलती है। पहली बात तो वह ख़ास-ख़ास ह़ालात के लिए हैं। दूसरी बात उन की अस्ल रुह़ अल्लाह की इस्तिआ़ज़ह, उस की तरफ़ तफ़वीज़ और ग़ैरुल्लाह से इज़हारे बराअत है, बाक़ी रहे वह तअ़वीज़ जिन में लायअ़नी कलिमात होते हैं और जिन में शिर्क के इस आमेज़श का गुमान या इ़ल्म है। उन के जवाज़ का शरअ़ ज़्यादातर में कोई इम्कान भी नहीं है लेकिन यह देखकर निहायत तकलीफ़ होती है कि तअ़वीज़ फ़रोशी की मौजूदा दुकानें ज़्यादातर ऐसे ही तअ़वीज़ों से चल रही हैं जो उ़मूमन मुश्रिकाना और ग़ैर मफ़हूम अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल होती हैं और अगर आयात कुर्आनी से भी इस्तिआ़ज़ह किया जाता है तो उ़मूमन तह़रीफ़ कर के पेश करते हैं।

समझते हैं। उन को मुस्तक़िल बिज़्ज़ात नाफ़ेअ़ वज़ा ख़याल करते हैं। उन की दुहाई देते हैं। उन के तअ़ल्लुक़ से ख़ुदा की कितनी जायज़ चीज़ों को ह़राम क़रार देते हैं और कितनी नाजायज़ बातों को जायज़ कर देते हैं।

इ़ल्म अस्मा-

इसी तरह़ कितने हैं जो इ़ल्म अस्मा और ख़वास कलिमात के चक्कर में रहते हैं और इस इ़ल्म को उसी तरह़ के बुरे मक़ासिद में इस्तेमाल करते हैं जिन में उन के पहले के यहूद इस्तेमाल करते थे। यहाँ तक कि कुछ ज़ालिमों ने खुद कुर्आन मजीद को भी हुब्ब व बुग्ज़, तस्ख़ीर व तफ़रीक़ और वज़अ़ व इस्तिक़रा यहाँ तक कि इम्साक के अ़मलियात का दफ़्तर बना रखा है इस क़िस्म के अ़मलियात के शौक़ीन ख़ुदा की नेअ़मतों को बाज़ औक़ात आ़रज़ी तौर पर और बाज़ ह़ालात में मुस्तक़िल ह़राम कर लेते हैं। इस गिरोह के बाज़ लोगों के सामने जब मैंने ज़िक्र किया कि इज़्न इलाही के बग़ैर किसी चीज़ को ह़राम व ह़लाल करना शिर्क है या ख़ास-ख़ास बीमारियों की मरीज़ों की मौजूदगी में कितनी चीज़ें हैं जो घरों के अन्दर इस डर से इस्तेमाल नहीं की जातीं कि जो अरवाह़ उन बीमारियों का ज़रिया हैं उन को उन चीज़ों से चिढ़ाते हैं जिससे उन को देखकर उन का ग़ज़ब और बढ़ता है।

नक्षत्रों, दिनों, महीनों और कुसूफ़ व खुसूफ़ से मुताल्लिक़ कितने मुश्रिकाना तवह्हुमात हैं जिन में औरतों से गुज़र कर आ़क़िल मर्दों तक गिरफ़्तार हैं।

बुर्जुग परस्ती और बिद्अ़तें-

कितने मुसलमान हैं जो आबा परस्ती की लअ़नतों में मुब्तिला हैं। मशायख़ और बुर्जुगों की क़ब्रें गोशा-गोशा में मौजूद हैं और एलानिया उन की पूजा हो रही है उन पर नज़रें पेश होती हैं, कुर्बानियाँ की जाती हैं। चादरें चढ़ाई जाती हैं, दुआ़एँ माँगी जाती है। मसायब और नुक़सानात को अस्ह़ाबे कुबूर की नाराज़गी पर महमूल किया जाता है उन की ज़ियारत के लिए लोग दूर-दूर से सफ़र कर के जाते हैं। उन पर मुराक़िबा करते हैं, सज्दः करते हैं और दूसरे बेशुमार मुजरिमात करते हैं जिन का ह़राम होना शरीअ़त में मालूम है।

तक़र्रुब इलाही के लिए उन का वसीला नागुज़ीर ख़याल किया जाता है, बहुतरे उन को समीअ़ व बसीर ख़याल करते ख़तूरात और मसायब के वक़्त उन को मदद के लिए पुकारते हैं।

उन को ख़ुदा के यहाँ अपना सिफ़ारिशी समझते हैं उन से दुनिया की कामियाबी, मुक़द्दमात में फ़तेह़ तिजारत में फ़रोग़ और आल व औलाद में बरकत माँगते हैं उन की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ मक़ासिद के लिए दरख़्वास्तें पेश की जाती हैं, यहाँ तक कि कुछ मज़ारात पर सायलीन की दरख़्वास्तों के लिए एहतिमाम है।

कितनी मुश्रिकाना बिद्अ़तें हैं जो ह़ज़रात सह़ाबा-ए-किराम (रज़ि०), सह़ाबियात और रसूल (सल्ल०) और अज़्वाज व औलादे मुतह्हरात रसूल (सल्ल०) के नाम से मौजूद हैं। उन के नाम से ख़ास-ख़ास पकवान पकाते हैं और उन के खाने में इसी क़िस्म की तफ़रीक़ें मल्हूज़ होती हैं जो मुश्रिकीन के यहाँ मल्हूज़ होती थीं[१] और जिन का क़ुर्आन ने सूरः अनआ़म में ज़िक्र फ़रमाया है।

कितने हैं जो रसूल (सल्ल०) को उन सिफ़ात में शरीक क़रार देते हैं जो अल्लाह तआ़ला के लिए मख़्सूस हैं। जैसा कहते हैं-

वही है जो मुस्तवी अ़र्श था ख़ुदा होकर
उतर पड़ा वह मदीना में मुस्तफ़ा होकर

बहुत सी जगहें नबी करीम (सल्ल०) और सह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के तबर्रूकात बताए जाते हैं और उन की ज़ियारत की तक़रीबात मुस्तक़िल फ़ित्ना बनी हुई है। बाज़ मक़ामात पर बुर्ज़ुगों की क़ब्रों और उन के तबर्रुकात के सन्दूक़ों या नबी (सल्ल०) के निशाने क़दम का ग़ुसाला, ज़ायरीन में तक़्सीम होता है और लोग उस को बहुत से अमराज़ रूहानी व जिस्मानी का वाह़िद इलाज समझ कर पीते हैं, आँखों में लगाते हैं, दाढ़ियों में मिलते हैं। मुहर्रम और ताज़ियादारी की मुश्रिकाना बिद्अ़तें हर शहर और देहात में मौजूद हैं और उन का कमोबेश तजुर्बः

१- मस्लन यह कि फ़लाँ नियाज़ को मर्द न खाएँ और फ़लाँ नियाज़ फ़लाँ क़िस्म की औ़रत न खाए और फ़लाँ नियाज़ सिर्फ़ दिन ही दिन में खाई जा सकती है और फ़लाँ नियाज़ रात के ही वक़्त खाई जा सकती है।

हर शख़्स को है।

नसब को ज़रिया निजात-

कितने हैं जो अपने नसब को ज़रिये निजात या कम अज़ कम ज़रिये तक़र्रुब इलाही समझते हैं। बाप-दादा का तरीक़ा कितनों के यहाँ दीन शुरु की ह़ैसियत रखता है। शरअ़ और रिवाज की इस्तिलाहें हर ज़बान पर चढ़ी हुई हैं और शरअ़ के मुक़ाबिले में अ़लल् ए़लान रिवाज को तरजीह़ देने वाले मुसलमानों के हर तब्क़े में मौजूद हैं।

दीनी मामलात में अल्लाह की हिदायत की तलाश और तलब तक़रीबन बिलकुल ख़त्म है। मुसलमानों में मुख़्तलिफ़ फ़िर्क़े हैं और हर फ़िर्क़े में अ़वाम से गुज़र कर उ़लमा तक ऐसे मिल जाएँगे जो अपने ख़ास तरीक़े, अपने मख़्सूस फ़िर्क़े के उ़लमा पर इस तरह़ जामिद और उन की अ़स्बियत में इस तरह़ गिरफ़्तार हैं कि उन के दायरे से बाहर उन के लिए ह़क़ व हिदायत का तसव्वुर भी दुश्वार हैं।

असबियत-

कितने हैं जो अल्लाह के फ़ज़्ल से दीन का इ़ल्म भी रखते हैं, लेकिन वह ह़क़ का मेअ़यार शुयूख़ व अकाबिर ही को समझते हैं। उन के शुयूख़ जो कर गये हों उस का ग़लत होना उन के नज़दीक नामुम्किन है और जिस तरी पर उन के शुयूख़ न हों उस की सेह़त पर कितने ही दलायल अल्लाह की किताब से, रसूल की सुन्नत से, अ़क़्ल से, नक़्ल से जमअ़ कर दीजिये, वह इस से मुतमईन नहीं होंगे जो अ़सबियत अल्लाह और उस के रसूल के लिए होनी चाहिए वह अ़सबियत उन के अन्दर अपने शेख़ व अकाबिर के लिए होती है और जो ह़मीयत अल्लाह की हिदायत और उस के रसूल के तरीक़े के लिए मतलूब है वह ह़मियत उन के अन्दर अपने उ़लमा के तरीक़े के लिए है और अच्छे ख़ासे ज़ेहीन लोग भी इस फ़ित्ना की अहमियत को नहीं समझते हैं।

ऊपर मुश्रिकीन की ख़ुदा परस्ती और यहूद की क़ौम परस्ती का भी ज़िक्र हुआ है और वहाँ हम ने दिखाया है कि एक किस तरह़ क़ौमें और जमाअ़तें ख़ुद

तागूत बन जाया करती हैं। किस तरह़ वह अल्लाह के तमाम वादों और उस की सारी बरकतों को ईमान बिल्लाह और अ़मल सालेह़ की जगह अपने नसब और ख़ानदान से वाबस्ता कर देती हैं। किस तरह़ अपने दायरे को निजात का दायरा और अपने तरीके़ को अल्लाह की हिदायत का क़ायम मक़ाम बना देती है।

ठीक यही ह़ाल इस वक़्त मुसलमानों का है, यह जो कुछ करते हैं वह आप से आप इस्लामी समझ लेते हैं। इस के लिए अल्लाह की किताब और उस के रसूल के तरीके़ से मुताबिक़ होना ज़रूरी नहीं समझते।

यह जो रंग ढंग अख़्तियार कर लें वह इस्लाम है। अगरचे वह मग़रिब की जाहिली तहज़ीब की नक्क़ाली ही क्यों न हो। जो तअ़लीम अपने बच्चों को दें वह इस्लामी तअ़लीम है अगरचे वह तअ़लीम बच्चा के दिल के अन्दर से इस्लाम की जड़ उखाड़ कर फेंक दे मुसलमान समझने लग गये हैं कि वह ख़ैरुल् उमुम हैं इसलिए उन का हर काम बेहतर और पाक है चाहे उसे शरीअ़त से कोई लगाओ हो या न हो। उन की अक्सरियत जो क़ानून बना दे वह ख़ुदा का क़ानून है, वह जो पालिश मुसलमानों के चेहरों के लिए तैयार कर दें वह सिब्ग़तुल्लाह है और इस राह में जो उन की क़यादत करे वह क़ायदे आ़ज़म है।

अगरचे ज़िन्दग़ी ख़ुदा से बग़ावत और नाफ़रमानियों ही में गुज़रें।

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया था कि तुम अपने अगलों (यहूद) के हर नक़्शे क़दम की पैरवी करोगे, ग़ौर कीजिए मुसलमानों की इस ज़ेहनियत में कैसे ह़ैरत अंगेज़ निशानियाँ हैं।

क़ुर्आन ने यहूद और मुनाफ़िक़ीन की तागूत परस्ती और ह़िमायते शिर्क को भी शिर्क क़रार दिया है। यहूद की तागूत परस्ती यह थी कि वह ऐसे लीडरों की पैरवी करते जो अल्लाह की हिदायत की जगह लोगों से अपनी हवा-ए-नफ़्स की पैरवी कराते थे, मुसलमानों का भी यही ह़ाल है। उन में कितने हैं जो आज ऐसे लीडरों की पैरवी कर रहे हैं जो उन से अपने हवा-ए-नफ़्स की पैरवी करा रहे हैं।

इस्लामी अह़काम-

इस्लामी अह़काम व तअ़लीमात के ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ीन की सरगोशियों और अहले ईमान के तरीक़े के ख़िलाफ़ उन की ख़ुद आराईयों को भी क़ुर्आन ने शिर्क

क़रार दिया है लेकिन आज कितने मुसलमान हैं जो अल्लाह व रसूल के अह़काम के ख़िलाफ़ एलानिया मज़ाक़ उड़ाते हैं।

शरीअ़त के अह़काम को नाक़ाबिले अ़मल और ख़िलाफ़े अ़क़्ल व तहज़ीब क़रार देते हैं। इस्लामी तअ़ज़ीरात और इस्लामी निज़ामे मआ़श व मआ़ीशत को सिर्फ़ चौदह सौ बरस पहले के ह़ालात के लिए साज़गार बताते हैं।

क़ुर्आन की अ़क़लियत को बहुतरे ज़माने के मेअ़यार से दूर समझते हैं और अपनी ज़िन्दग़ी के हर शोबे में, चाहे वह ज़ाहिर से मुतअ़ल्लिक़ हो या बातिन से इस जादू में डूबे हुए हैं जो अल्लाह और उस के रसूल ने अहले ईमान के लिए मुतअ़य्यन किया है। उन का फ़िक्र ग़ैर इस्लामी है। जो चीज़ अल्लाह व रसूल के हाँ मतलूब व मह़बूब है उन के यहाँ कोई अहमियत नहीं है जो अल्लाह व रसूल के नज़दीक मरदूद है वह उन के यहाँ मतलूब व मक़बूल है।

उन्होंने या तो अपने नफ़्स को इल्लाह बना रखा है या उन लोगों को इल्लाह बना रखा है जिन की तअ़लीम व तहज़ीब से वह मरअ़ूब हैं। इस्लाम के साथ उन की निस्बत सिर्फ़ इस क़दर है कि वह उन तमाम बातों के साथ-साथ अपने आप को मुसलमान भी कहते हैं।

मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती-

मुनाफ़िक़ीन की मफ़ाद परस्ती को भी शिर्क क़रार दिया गया है। आज कितने मुसलमान हैं जो अल्लाह की बन्दग़ी का दावा करते हैं, लेकिन वह बिल्कुल ***'वमिनन्नासि मय्यअ़बुदुल्लाहा अ़ललह़रफ़'*** की तस्वीरें हैं जिस ह़द तक इस्लाम की तस्वीर हैं जिस ह़द तक इस्लाम के इक़रार और उस की पैरवी में कोई शुब्हा नहीं है उस ह़द तक वह मुसलमान हैं।

लेकिन जहाँ से इस्लाम के वह मुतालिबात शुरु होते हैं जिन से उन के किसी दुनयवी फ़ायदे को नुक़सान पहुँचता नज़र आता है या ज़िन्दग़ी को आज़माईशों से दो चार होना पड़ता है वहीं से वह कट के अलग हो जाते हैं उन्होंने अपने आप को पूरे तौर पर अल्लाह और रसूल के ह़वाले नहीं किया है।

वह रसूल को सिर्फ़ एतिक़ाद की ह़द तक रसूल मान लेना काफ़ी समझते

हैं, उस की लाई हुई तअ़लीम और उस की बख़्शी हुई हिदायत का ज़िन्दगी के हर शोअ़बे में वाजिबुबल इताअ़त होना उन के नज़दीक तौह़ीद और ईमान बा रिसालत का जुज़्व नहीं है। ह़ालांकि हर रसूल اعْبُدُوا اللّٰه (अल्लाह की बन्दगी) के साथ وَاطِيعُونِ (और मेरी इताअ़त करो) का भी हुक्म देता है और यह भी वाज़ेह़ कर देता है कि जो मेरे तरीक़े के ख़िलाफ़ हैं उन से बग़ावत करो।

यही वह नुक्ता है जहाँ से कुफ़्र व इस्लाम का अस्ली झगड़ा शुरु होता है, वरना इस एतिक़ाद में कि अल्लाह एक है रसूल अल्लाह के भेजे हुए हैं, हम अल्लाह, उस के फ़रिश्तों, उस के नबियों और उस की किताबों और आख़िरत पर ईमान लाते हैं, ऐसी क्या बात है जिस पर गर्दनें कटीं, तलवारें चमकीं और हिजरत, जिहाद, और क़िताल के मरहले पेश आएँ?

अ़रब में ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से पहले ऐसे लोग मौजूद थे जो बुत परस्ती के खुल्लम खुल्ला मुन्किर थे और उन में बाज़ मशहूर ख़तीब भी थी जो एलानिया अपने खुत्बों में तौह़ीद का ज़िक्र करते थे, लेकिन ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) से सिर्फ़ इस बात पर लड़ाई करते कि वह अपने आप को अल्लाह का रसूल समझते हैं और बुतों के मुख़ालिफ़ हैं।

उनकी सारी लड़ाई तो इसी बात पर थी कि यह ख़ुदा की इताअ़त को उस की बन्दगी का ज़रूरी जुज़्व क़रार देते हैं और इस इताअ़त का जो रास्ता अपनी इताअ़त बताते हैं और हम से बग़ावत उस की शर्त लाज़िम क़रार देते हैं। दीन का यही ह़िस्सा है जो प्राईवेट नहीं हो सकता।

मुसलमानों के ऊपर आहिस्ता-आहिस्ता शिर्किया आ़माल व अ़क़ायद की तहें जमती जा रही हैं और इस की वजह इस के सिवा कुछ नहीं है कि एक मुद्दत से किसी सही दीन निज़ाम के मौजूद न होने और तागूत के ग़ल्बा की वजह से तौह़ीद और उस की ताकतों का सही शुऊर उन में गायब होता जा रहा है।

इसलिए ज़रूरत इस बात की है कि शिर्क के हर क़िस्म के जरासीम को निकाल कर तौह़ीद का मनार क़ायम किया जाय तब कि तमाम इन्सानियत दुनिया व आख़िरत के वबाल से मह़फ़ूज़ जाए। हर व्यक्ति यह काम अपने घर से शुरु करे, यहाँ तक कि दुनिया मह़सूस करे कि शिर्क एक बहुत बड़ा गुनाह है।